राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संगठन की मासिक पत्रिका

# स्काउट गाइड ज्योति

वर्ष-26 | अंक-08 | फरवरी, 2026 | कुल पृष्ठ-32 | मूल्य-₹ 15

भारत स्काउट व गाइड, राष्ट्रीय मुख्यालय, नई दिल्ली के तत्वावधान में छत्तीसगढ़ में आयोजित प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी में राष्ट्रीय पदाधिकारियों से जम्बूरी का सर्वोच्च अवार्ड 'चीफ नेशनल कमिश्नर शील्ड' एवं अन्य शील्ड्स प्राप्त करते हुए

राजस्थान के राज्य मुख्य आयुक्त श्री निरंजन आर्य एवं राज आयुक्त श्री आर.पी. सिंह, राज सचिव डॉ. पी.सी. जैन एवं अन्य अधिकारी प्राप्त अवार्ड के साथ

## रोवर रेंजर जम्बूरी में राज्य मुख्य आयुक्त

## पायनियरिंग एवं फर्स्ट एड स्पेशल कोर्स

राज्य प्रशिक्षण केन्द्र, जगतपुरा, जयपुर में आयोजित पायनियरिंग स्पेशल कोर्स के संभागी स्काउटर व गाइडर ( ऊपर ) एवं फर्स्ट एड स्पेशन कोर्स के संभागी स्काउटर गाइडर ( नीचे ) का राज्य मुख्य आयुक्त श्री निरंजन आर्य, राज्य प्रशिक्षण आयुक्त श्री बन्ना लाल एवं प्रशिक्षकों के साथ समूह चित्र

**स्काउट गाइड ज्योति**
**वर्ष : 26 अंक : 08**
**फरवरी, 2026**

## सलाहकार मण्डल

**निरंजन आर्य**
आई.ए.एस. (से.नि.)
स्टेट चीफ कमिश्नर

**आशीष मोदी**, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (स्काउट)

**निर्मल पंवार**
स्टेट कमिश्नर (रोवर)

**डॉ. भंवर लाल**, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (कब)

**महेन्द्र कुमार पारख**, आई.ए.एस.(से.नि.)
स्टेट कमिश्नर (एडल्ट रिसोर्स)

**रूक्मणि आर.सिहाग**, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (गाइड)

**शुचि त्यागी**, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (रेंजर)

**टीना डाबी**, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (बुलबुल)

**मुग्धा सिन्हा**, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (एडल्ट रिसोर्स)

**स्टेट कमिश्नर (हैडक्वाटर्स–स्काउट)**
**नवीन महाजन, आई.ए.एस.**
**नवीन जैन, आई.ए.एस.**
**टीकम चंद बोहरा, आई.ए.एस.**
**आर.पी. सिंह, आई.पी.एस. (से.नि.)**
**डॉ. एस.आर. जैन**
**डॉ. अखिल शुक्ला**
**मनीष कुमार शर्मा**

**राज्य कोषाध्यक्ष**
**ललित वर्मा**

## सम्पादक

**डॉ. पी.सी.जैन**
**राज्य सचिव**

## सहायक सम्पादक

**नीरज जैन**

## इस अंक में

| विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| दिशाबोध | 4 |
| संपादकीय | 4 |
| गणतंत्र दिवस ध्वजारोहण | 5 |
| द्वितीय पायनियरिंग स्पेशल कोर्स | 6 |
| फर्स्ट एड स्पेशल कोर्स | 6 |
| प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी 2026 | 7 |
| विश्व स्काउट एवं चिंतन दिवस | 12 |
| गतिविधि दर्पण | 14 |
| 78वां सेना दिवस परेड | 19 |
| लुई ब्रेल जयंती पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का सम्मान | 19 |
| पर्यटन स्थल : कालीबंगा | 20 |
| हमारा स्वास्थ्य : तुलसी | 28 |
| हमारे महापुरुष : स्वामी दयानन्द सरस्वती | 24 |
| प्रशिक्षण केन्द्र रिडमलसर, बीकानेर | 26 |
| दक्षता पदक | 28 |
| गतिविधि पञ्चांग | 30 |

## लेखकों से निवेदन

स्काउट गाइड ज्योति का प्रकाशन मात्र प्रकाशन भर नहीं है बल्कि यह पत्रिका हमारे संगठन का दर्पण है, जो आयोजित हो चुकी गतिविधियों को प्रस्तुत करने, संगठन के कार्यों और इसके प्रशिक्षण तथा अन्य समाजोपयोगी क्रियाकलापों के विचारों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम है।

समस्त पाठकों, सृजनात्मक एवं रचनाधर्मी प्रतिभाओं से स्वलिखित, मौलिक व पूर्व में अप्रकाशित स्काउटिंग गाइडिंग से संबंधित लेख, यात्रा वृत्तान्त, कैम्प क्राफ्ट संबंधी लेख, प्रशिक्षण विधि, पाठक प्रतिक्रिया आदि प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। आपके अनुभव प्रत्येक स्काउट गाइड के लिए अमूल्य हैं। आप द्वारा प्रेषित सामग्री आपके नाम व फोटो के साथ प्रकाशित की जावेगी। लेख स्पष्ट टंकित हो तथा उस पर यह अवश्य लिखा हो कि 'यह लेख मौलिक एवं अप्रकाशित है'।

प्रकाशनार्थ सामग्री हमारी ईमेल आई.डी. **scoutguidejyoti@gmail.com** पर भिजवाई जा सकती हैं।

| स्काउट गाइड ज्योति वार्षिक सदस्यता शुल्क | आजीवन सदस्यता शुल्क |
|---|---|
| व्यक्तिगत शुल्क : 100/– संस्थागत शुल्क : 150/– | 1200/– |
| शुल्क राशि राज्य मुख्यालय जयपुर पर एम.ओ. अथवा 'राजस्थान स्टेट भारत स्काउट एण्ड गाइड, जयपुर' के नाम डिमान्ड ड्राफ्ट द्वारा जमा कराई जा सकती है। | |

**नोट : स्काउट गाइड ज्योति में छपे/व्यक्त विचार प्रस्तोता के अपने हैं। यह जरूरी नहीं है कि संगठन इनसे सहमत ही हो।**

# दिशाबोध

# विश्व स्काउट व चिंतन दिवस

सर्वप्रथम मैं छत्तीसगढ़ में आयोजित हुई प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी में प्रथम स्थान प्राप्त कर सर्वोच्च अवार्ड राजस्थान के नाम कर सफलता का परचम फहराने के लिए मेरे प्रदेश के सभी रोवर रेंजर व उनके लीडर्स को बधाई देना चाहता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास था कि आप सभी की दृढ़–इच्छाशक्ति, आत्म–विश्वास और मेहनत के कारण सफलता हमारे पास खिंची चली आएगी और हम एक बार फिर सफलता के शिखर को चूमेंगे....और मेरा विश्वास कायम रहा।

इस फरवरी माह में जयपुर में नियमित गतिविधि के रूप में 9 से 12 फरवरी तक राज्य पुरस्कार रैली का आयोजन किया जा रहा है, परन्तु इस नियमित गतिविधि को नये आयाम जोड़ते हुए नवीन स्वरूप प्रदान करना है। आप सभी को मालूम ही है कि इसमें वर्षभर प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी क्षमताओं को विकसित करते हुए अपनी दक्षता बढ़ाकर राज्य पुरस्कार उत्तीर्ण करने वाले स्काउट्स गाइड्स को महामहिम राज्यपाल के हस्ताक्षरयुक्त प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया जाता है। 22 फरवरी का पावन दिवस इस संगठन के संस्थापक लार्ड एवं लेडी बैडन पॉवेल के जन्मदिन के उपलक्ष में विश्व स्काउट व चिन्तन दिवस के रूप में समारोह पूर्वक आयोजित किया जाता है। इसी महिने प्रदेश संगठन द्वारा नन्हें कब–बुलबुल को हीरक पंख और चतुर्थ चरण के प्रमाण पत्र प्रदान कर उनकी आगे की राह को प्रशस्त करने का प्रयास होता है तथा रोवर–रेंजर्स को निपुण प्रमाण पत्र से अलंकृत किया जाता है। यह एक ऐसा विशिष्ट दिन है जब संगठन के तीनों विभागों के बालक–बालिकाओं को सम्मानित होने का सुअवसर मिलता है। साथ ही व्यस्क लीडर्स को उनकी वर्षभर की सेवाओं के फलस्वरूप मेडल ऑफ मेरिट व दीर्घकालीन अवार्ड तथा संगठन को अद्वितीय सहयोग प्रदान करने वाले महानुभावों को धन्यवाद पत्र से अलंकृत कर हम स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं।

हमने अपने उद्देश्यों को ऊँचाई प्रदान की है, मेरा सभी से आव्हान है कि इस शिविर में नवीन कार्यक्रमों के समावेश से बालक–बालिकाओं में ऊर्जा–स्फूर्ति का संचार होगा। युवाओं की यही ऊर्जा और स्फूर्ति उनके स्वयं के और देश के निर्माण में सहायक सिद्ध होगी। सभी के अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि राजस्थान प्रदेश सम्पूर्ण राष्ट्र में अग्रणी है, परन्तु हमारी मंज़िल यहाँ तक सीमित नहीं है, हमें रूकना नहीं है बस बढ़ते जाना है!

विश्व स्काउट व चिन्तन दिवस की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं....

**निरंजन आर्य**
**स्टेट चीफ कमिश्नर**

# संपादकीय

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम ने एक बार जोधपुर में स्कूली बच्चों के बीच बैठकर सफलता के तीन सूत्र बताए – रचनात्मकता, उल्लास और साहस। ये तीनों ही सूत्र स्काउटिंग के मनोविज्ञान में सम्मिलित हैं और गत माह छत्तीसगढ़ में आयोजित प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी में दिखलाई भी दिए। स्काउट गाइड, रोवर रेंजर नित् नये कार्य करते हैं, नई–नई विधाएं सीखते है। स्काउट गाइड सामुदायिक व शिविर जीवन में जो कुछ देखता व करता है, वह रचनात्मकता है। खुले आसमान के नीचे कलात्मक प्रवेश द्वार बनाना, गीत–संगीत, क्राफ्ट की गतिविधियां सब प्रतिभागियों को रचनात्मक बनाते हैं। कैसा भी मौसम हो बालचरों की उर्जा एवं जोश में कोई कमी नही आती, कैसी भी गतिविधि हो इनकी जिंदादिली देखते ही बनती है। यही रचनात्मकता, उल्लास और साहस हमें अपने दैनिक क्रियाकलापों में भी दिखाना है और प्रदेश संगठन की उपादेयता सुनिश्चित करना है।

हम स्वयं को सदैव गौरवान्वित महसूस करेंगे कि अपने जीवनकाल में हमें इस विश्वव्यापी सेवाभावी संगठन का सदस्य बनने का मौका मिला। बी.पी. ने अपने सैन्य जीवन के अनुभवों के आधार पर एक ऐसे संगठन की नींव रखी जो बालक–बालिकाओं के शारीरिक, मानसिक, चारीत्रिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए पूर्णतः सैन्य अभियान की भांति अनुशासित रूप से पूरी ईमानदारी से अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए संकल्पित भाव से कार्य कर रहा है।

मेरी ओर से सभी को शुभकामनाएं....

**डॉ. पी.सी. जैन**
**राज्य सचिव**

विशेष

# गणतंत्र दिवस ध्वजारोहण

77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के राज्य मुख्यालय भवन पर प्रदेश के राज्य मुख्य आयुक्त श्री निरंजन आर्य ने प्रातः राष्ट्रीय ध्वज फहराकर सभी को हार्दिक बधाई देते हुए भारत के गणतंत्र व संविधान की अक्षरशः पालना करने, देश के मान व सम्मान को बढ़ाने तथा देश की सदैव रक्षा करने के लिए आह्वान किया।

इस अवसर पर राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन सहित समस्त अधिकारी व कार्मिक उपस्थित थे।

## बालचर आवासीय विद्यालय

जयपुर के जगतपुरा स्थित राज्य प्रशिक्षण केन्द्र पर संचालित राजस्थान बालचर आवासीय विद्यालय द्वारा आयोजित 77वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर प्रदेश के राज्य मुख्य आयुक्त श्री निरंजन आर्य ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करते हुए राष्ट्रीय ध्वज फहराया। स्टेट कमिश्नर श्री आर.पी. सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अतिथियों ने सभी अध्यापकों व विद्यार्थियों को अपने देश के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए सदैव अग्रसर रहने तथा अपने आचरण व व्यवहार को भारतीय संविधान की भावना के अनुरूप बनाए रखने का आह्वान किया।

विद्यार्थियों ने मार्चपास्ट की तथा सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन सहित विद्यालय प्रधानाचार्य, अध्यापकगण तथा स्काउट गाइड अधिकारी व कार्मिक उपस्थित थे।

विशेष

# द्वितीय पायनियरिंग स्पेशल कोर्स

## राज्य प्रशिक्षण केन्द्र, जगतपुरा ( जयपुर ) में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर

राज्य प्रशिक्षण केन्द्र, जगतपुरा (जयपुर) में दिनांक 19 जनवरी 2026 से 23 जनवरी 2026 तक राज्य स्तरीय द्वितीय पायनियरिंग स्पेशल कोर्स का सफल आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर का संचालन श्री रघुवीर सिंह, एल.टी. (स्काउट) द्वारा किया गया, जिनके कुशल नेतृत्व में कार्यक्रम अत्यंत अनुशासित एवं प्रभावशाली रहा।

शिविर में राजस्थान के विभिन्न जिलों से कुल 40 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर संचालन में सह–संचालकों के रूप में श्री छगन लाल (अलवर), श्री बाबुदीन काठात (दौसा) एवं श्रीमती रीटा गहलोत (गंगानगर) का उल्लेखनीय योगदान रहा। साथ ही राज्य प्रशिक्षण केन्द्र के श्री ओमप्रकाश शर्मा (क्वार्टर मास्टर) एवं श्री लीला राम (स्काउट सहायक) ने व्यवस्थाओं में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। प्रतिभागियों एवं स्टाफ के लिए आवास की व्यवस्था हट्स में की गई थी तथा भोजन व्यवस्था केन्द्रीय मेस द्वारा उत्तम स्तर पर संचालित की गई।

शिविर में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री निरंजन आर्य (राज्य मुख्य आयुक्त, राजस्थान) एवं डॉ. पी.सी. जैन (राज्य सचिव, राजस्थान) की गरिमामयी उपस्थिति रही। वहीं अतिथि प्रशिक्षक के रूप में श्री पूरण सिंह शेखावत (राज्य संगठन आयुक्त, स्काउट) एवं श्री बन्ना लाल (राज्य प्रशिक्षण आयुक्त, स्काउट) के मार्गदर्शन से प्रशिक्षण को विशेष गुणवत्ता प्राप्त हुई।

पूरे शिविर के दौरान केम्पिंग नियमों का पूर्ण पालन किया गया। समग्र रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत सफल, अनुशासित एवं उच्च स्तरीय रहा।

# फर्स्ट एड स्पेशल कोर्स

राज्य प्रशिक्षण केन्द्र, जगतपुरा (जयपुर) में दिनांक 19 जनवरी 2026 से 23 जनवरी 2026 तक राज्य स्तरीय फर्स्ट एड स्पेशल कोर्स का सफल आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर का कुशल संचालन श्री छगन लाल, एल.टी.–स्काउट द्वारा किया गया। शिविर में प्रदेश के विभिन्न जिलों से कुल 26 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

शिविर के संचालन में सह–संचालकों के रूप में श्री रघुवीर सिंह एल.टी. (स्काउट) टोंक, श्री बाबुदीन काठात एल.टी. (स्काउट) दौसा तथा श्रीमती रीटा गहलोत एल.टी. (गाइड) गंगानगर का महत्वपूर्ण योगदान रहा। व्यवस्थाओं में राज्य प्रशिक्षण केन्द्र के श्री ओमप्रकाश शर्मा (लिपिक ग्रेड एवं क्वार्टर मास्टर) तथा श्री लीला राम (स्काउट सहायक) ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। प्रतिभागियों एवं स्टाफ के लिए आवास व्यवस्था हट्स में की गई थी तथा भोजन व्यवस्था केन्द्रीय मेस द्वारा संतोषजनक एवं स्तरीय रही।

शिविर के दौरान श्री निरंजन आर्य, राज्य मुख्य आयुक्त राजस्थान तथा डॉ. पी.सी. जैन, राज्य सचिव राजस्थान की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिससे प्रतिभागियों का उत्साह और अधिक बढ़ा। अतिथि प्रशिक्षक के रूप में श्री पूरण सिंह शेखावत, राज्य संगठन आयुक्त (स्काउट) तथा श्री बन्ना लाल, राज्य प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट) ने अपने अनुभवपूर्ण मार्गदर्शन से प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाया।

पूरे शिविर के दौरान नियमों का पूर्ण अनुशासन के साथ पालन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत सफल, उपयोगी एवं उच्च स्तरीय रहा। स्टाफ का सहयोग सकारात्मक रहा तथा भोजन एवं अन्य सुविधाएँ भी सराहनीय रहीं। कुल मिलाकर यह शिविर प्रतिभागियों के व्यक्तित्व विकास, सेवा भावना और कौशल उन्नयन की दृष्टि से अत्यंत प्रेरणादायी सिद्ध हुआ।

# प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी 2026

**स्थानः ग्राम दुधली, जिला बालोद, छत्तीसगढ़**
**अवधिः 09 जनवरी से 13 जनवरी 2026**

भारत स्काउट्स एवं गाइड्स राष्ट्रीय मुख्यालय, नई दिल्ली के तत्वावधान में प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी का आयोजन दिनांक 09 जनवरी 2026 से 13 जनवरी 2026 तक ग्राम दुधली, जिला बालोद, छत्तीसगढ़ में अत्यंत भव्य रूप में संपन्न हुआ। इस राष्ट्रीय स्तर के आयोजन में देश के 35 राज्यों एवं विभिन्न संगठनों से लगभग 11,000 से अधिक रोवर एवं रेंजरों ने सहभागिता की।

राजस्थान भारत स्काउट्स एवं गाइड्स संगठन की ओर से कुल 980 सदस्यों का दल इस जम्बूरी में सम्मिलित हुआ, जो छत्तीसगढ़ राज्य के दल (लगभग 5000 प्रतिभागी) के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा दल रहा। राजस्थान के विभिन्न जिलों बीकानेर, चूरू, अलवर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, राजसमंद, प्रतापगढ़ आदि से प्रतिभागी बसों द्वारा तथा शेष जिलों से रेल द्वारा 07 जनवरी 2026 से जम्बूरी स्थल पर पहुँचना प्रारंभ हुए। 09 जनवरी 2026 तक राजस्थान प्रदेश का संपूर्ण दल जम्बूरी स्थल पर उपस्थित हो गया।

दुर्ग रेलवे स्टेशन पर पहुँचने के पश्चात भारत स्काउट्स एवं गाइड्स राष्ट्रीय मुख्यालय एवं छत्तीसगढ़ सरकार के सहयोग से उपलब्ध कराई गई निःशुल्क बसों द्वारा सभी प्रतिभागियों को जम्बूरी स्थल दुधली, बालोद तक पहुँचाया गया। राजस्थान दल ने स्थल पर पहुँचते ही आवास व्यवस्था सुनिश्चित की तथा शिविर संचालन हेतु आवश्यक सभी व्यवस्थाएँ प्रारंभ कर दीं। सूर्यास्त तक पूरा जम्बूरी मैदान रंग–बिरंगे टेंटों, गेटों और शिविर संरचनाओं से अत्यंत आकर्षक रूप ले चुका था।

## उद्घाटन समारोह 09 जनवरी 2026

दिनांक 09 जनवरी 2026 को प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी का भव्य उद्घाटन माननीय राज्यपाल श्री रमेन डेका के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। उद्घाटन अवसर पर उन्होंने जम्बूरी पत्रिका एवं न्यूज बैज का विमोचन किया। इस समारोह में देश के 35 राज्यों एवं संगठनों से आए हजारों रोवर रेंजर्स की उपस्थिति ने आयोजन को ऐतिहासिक बना दिया। छत्तीसगढ़ के रोवर रेंजर्स द्वारा पारंपरिक सुआ गीत, लोकनृत्य तथा देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं।

राज्यपाल महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि जम्बूरी केवल एक शिविर नहीं बल्कि एकता, विविधता, भाईचारा और साझा उद्देश्यों का उत्सव है। उन्होंने कहा कि जम्बूरी एक जीवंत शिक्षालय है, जहाँ विभिन्न राज्यों, भाषाओं और संस्कृतियों से आए युवा एक परिवार के रूप में सीखते हैं। उन्होंने कहा कि भारत हमेशा आध्यात्म एवं वैदिक संस्कारों से सजीव रहा है। यह राष्ट्रीय रोवर रेंजर जंबूरी लाइफ स्किल्स पर जोर देती है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ की सरलता, सहजता और सांस्कृतिक समृद्धि का उल्लेख करते हुए युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण हमारा छत्तीसगढ़ राज्य केंद्र एवं राज्य के प्रयासों से नक्सल मुक्त होने वाला है।

शिक्षा मंत्री श्री जगन्नाथ ठाकुर ने कहा कि स्काउटिंग युवाओं को विपरीत परिस्थितियों में जीने की कला सिखाती है। राष्ट्रीय मुख्य आयुक्त डॉ. के.के. खंडेलवाल ने युवाओं को जीवन के उतार–चढ़ाव से जूझने और निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। छत्तीसगढ़ राज्य के मुख्य आयुक्त श्री इंदरजीत खालसा ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल कुमार जैन ने कहा कि छत्तीसगढ़ के बालोद जिले के ग्राम दुधली में प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी का आयोजन अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

इस अवसर पर जिप्स अध्यक्ष श्री तारणी प्रसाद चंद्रा, उपाध्यक्ष श्री तोमन साहू, शिक्षा सचिव श्रीमती अनिता परखी, सचिव ए.आर. राऊत, आईजी श्री रमन गोपाल गर्ग, कलक्टर श्रीमती दिव्या उमेश मित्रा, एसपी श्री योगेश पटेल, चिप्स सीईओ श्री सुनील चंद्रेशी, अपर कलक्टर श्रीमती वंदना कौशिक सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

## द्वितीय दिवस 10 जनवरी 2026: गतिविधियाँ, एडवेंचर एवं नाइट हाईक

जम्बूरी के दूसरे दिन बी.पी. सिक्स, शिविर निरीक्षण, ध्वजारोहण के साथ–साथ विभिन्न साहसिक गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिनमें हार्ड ब्लो, बैलेंसिंग अनलॉक, लैडर क्लाइम्बिंग, टायर टनल, मड गेम, बाइक राइडिंग, हॉर्स राइडिंग, जल गतिविधियाँ तथा जिप लाइन प्रमुख रहीं। सभी रोवररेंजर्स ने इन गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता कर अत्यंत आनंद लिया।

इसी दिन नाइट हाईक एवं तारामंडल परियोजना का आयोजन शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कोरबा, दुधली में किया गया। रोवररेंजर्स जम्बूरी स्थल से पैदल मार्च करते हुए देशभक्ति एवं पर्यावरण संरक्षण के नारे लगाते हुए विद्यालय परिसर पहुँचे। विभिन्न राज्यों द्वारा लगाए गए विभागीय स्टॉल एवं प्रदर्शनी का अवलोकन कर प्रतिभागियों ने योजनाओं, संस्कृति, भाषा और परंपराओं की जानकारी प्राप्त की।

## राजस्थान दिवस का आयोजन

जम्बूरी के दौरान राजस्थान दल द्वारा भव्य राजस्थान दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय मुख्य आयुक्त डॉ. के.के. खंडेलवाल, स्टेट चीफ कमिश्नर श्री खालसा, निदेशक श्रीमती दर्शन पावसकर, श्री अमर बी. क्षेत्री सहित राष्ट्रीय मुख्यालय के पदाधिकारी, विभिन्न राज्यों के दल नेता, सब–कैम्प चीफ एवं स्थानीय प्रशासन के अधिकारी उपस्थित रहे।

राजस्थान दल के रोवर रेंजर्स द्वारा राजस्थानी लोकनृत्य, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुति दी गई। राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन द्वारा सभी अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया गया तथा राजस्थानी परंपरा अनुसार साफा, शाल, स्कार्फ एवं माला पहनाकर सम्मानित किया गया। राजस्थान बैंड द्वारा आकर्षक प्रदर्शन किया गया। रोवररेंजर्स द्वारा दाल–बाटी, राब, मालपुआ, बाजरे की रोटी, आम पापड़ आदि पारंपरिक व्यंजन तैयार किए गए, जिनका अतिथियों ने भरपूर आनंद लिया।

## तृतीय दिवस 11 जनवरी 2026: युवा संसद एवं प्रतियोगिताएँ

तीसरे दिन जम्बूरी में विविध गतिविधियाँ एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें स्काउट–गाइड प्रदर्शनी, छत्तीसगढ़ सरकार की प्रदर्शनी, वृक्षारोपण, स्वच्छ भारत अभियान, एडवेंचर एवं वॉटर एक्टिविटी, नाइट हाईक पंजीकरण, सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल हब, नारी शक्ति पवेलियन, स्काउट–गाइड गिल्ड गैदरिंग, मार्च पास्ट, ट्राइबल कार्निवल, बैकवुड्स कुकिंग, राज्य प्रदर्शनी, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण, पायनियरिंग प्रोजेक्ट मूल्यांकन, क्विज प्रतियोगिता, ओवरनाइट

हाईक, स्टार गेजिंग एवं सी.डी. गतिविधि आयोजित हुई।

युवा संसद कार्यक्रम विशेष आकर्षण रहा, जिसमें प्रतिभागियों ने प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, वित्त मंत्री, रेल मंत्री, नेता प्रतिपक्ष आदि की भूमिका निभाकर लोकतांत्रिक प्रणाली पर सार्थक चर्चा की।

स्वच्छ भारत श्रेष्ट भारतः राष्ट्रीय रोवर रेंजर जंबूरी में एक भारत श्रेष्ठ भारत का संदेश देते हुए राजस्थान दल के रोवर्स रेंजर्स द्वारा स्वच्छ भारत अभियान सामुदायिक सेवा कार्य में सहभागिता की गई।

**बैकवुड्स कुकिंगः** राजस्थान दल द्वारा बैकवुड्स कुकिंग में 123 प्रकार के व्यंजन प्रस्तुत किए गए, जिनमें बाजरे की रोटी, राब, लहसुन चटनी, दूध पानिया, आम पापड़, दाल–बाटी, मालपुआ आदि प्रमुख रहे। राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा राजस्थान के भोजन की विशेष सराहना की गई। साथ ही उदयपुर संभाग के नेतृत्व में जनजातीय कला, लोकनृत्य, लोकगीत एवं संस्कृति का सुंदर प्रदर्शन किया गया।

**कैम्पफायरः** रात्रि में शिविर ज्वाल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें राजस्थान दल के रोवर्स रेंजर्स द्वारा शानदार प्रस्तुति दी गई।

**पायनियरिंग प्रोजेक्टः** पायनियरिंग प्रोजेक्ट प्रतियोगिता के तहत अजमेर मण्डल द्वारा शानदार वाचिंग टावर का निर्माण किया गया। जिसे अन्य प्रदेश से आए रोवर्स रेंजर्स एवं लीडर्स द्वारा सराहा गया।

**स्टेट गेट:** बीकानेर मण्डल द्वारा स्काउट विभाग के राजस्थान गेट का भव्य निर्माण किया गया। जो राजस्थान प्रदेश के खुबसूरती को दर्शाता नज़र आया।

**राज्य प्रदर्शनी:** राजस्थान राज्य की प्रदर्शनी का संयोजन जयपुर मण्डल द्वारा किया गया, जिसमें राजस्थान के समस्त जिलों की संस्कृति एवं कलाओं को दर्शाने वाला अनोखा संग्रह, पायनियरिंग मॉडल के प्रोजेक्ट, सी डी प्रोजेक्ट, विभिन्न जम्बूरियों के स्कार्फ, बैज, वेस्ट टू बैस्ट, सिंगल यूज प्लास्टिक, इको क्लब इत्यादि द्वारा तैयार की गई वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया।

## चतुर्थ दिवस 12 जनवरी 2026: योग, झांकी एवं रक्तदान शिविर

चौथे दिन प्रातः मुख्य एरिना में विशाल योग सत्र आयोजित हुआ, जिसमें राजस्थान के सभी संभागों से आए रोवर रेंजर्स ने भाग लिया। राजस्थान की सांस्कृतिक झांकी में पुष्कर मेला, भरतपुर की होली, जयपुर की गणगौर, जोधपुर का गैर लोकनृत्य, कोटा संभाग की सामुदायिक सेवा झांकी तथा उदयपुर संभाग की गंवरी नृत्य झांकी प्रस्तुत की गई।

राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर जम्बूरी अस्पताल में रक्तदान शिविर आयोजित हुआ, जिसमें राजस्थान प्रदेश के रोवर रेंजर्स ने उत्साहपूर्वक रक्तदान कर समाज सेवा का परिचय दिया।

## समापन समारोह एवं राजस्थान की उपलब्धि

प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी का समापन समारोह दिनांक 13 जनवरी 2026 को दोपहर 2 बजे संपन्न हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय, अध्यक्षता पूर्व राज्यसभा सांसद डॉ. अनिल जैन, विशिष्ट अतिथि शिक्षा मंत्री श्री गजेन्द्र यादव, सांसद श्री भोजराज नागा, राष्ट्रीय मुख्य आयुक्त डॉ. के.के. खंडेलवाल, विधायक श्रीमती संगीता सिन्हा उपस्थित रहे। इस अवसर पर राजस्थान दल द्वारा मार्च पास्ट एवं लोकनृत्य की सुंदर

प्रस्तुति दी गई।

अंतिम दिन सर्वधर्म प्रार्थना सभा, अंतिम सब–कैम्प निरीक्षण, कैंप–क्राफ्ट मूल्यांकन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित हुआ। परिणामों की घोषणा के अनुसार राजस्थान प्रदेश को नेशनल कमिश्नर शील्ड एवं फ्लैग प्रदान किया गया। कुल 16 गतिविधियों में राजस्थान ने 14 गतिविधियों में 'ए' ग्रेड एवं 2 गतिविधियों में 'बी' ग्रेड प्राप्त कर राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

यह सम्मान माननीय स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य, स्टेट कमिश्नर श्री आर.पी. सिंह, राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन, राज्य संगठन आयुक्त स्काउट पूरण सिंह शेखावत, राज्य प्रशिक्षण आयुक्त श्री बन्नालाल एवं अन्य द्वारा ग्रहण किया गया।

प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी 2026 युवाओं के लिए नेतृत्व, अनुशासन, सेवा, साहस, सांस्कृतिक समरसता और राष्ट्रीय एकता का सशक्त मंच सिद्ध हुई। राजस्थान दल की अनुकरणीय सहभागिता, उत्कृष्ट प्रदर्शन और राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करना सम्पूर्ण प्रदेश के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। यह जम्बूरी सभी प्रतिभागियों के लिए जीवनभर का स्मरणीय अनुभव बन गई।

# विश्व स्काउट एवं चिंतन दिवस

## स्काउट संस्था के जन्मदाता के जन्मदिन पर विशेष

## लार्ड बैडन पॉवेल

जन्म दिन ( 22 फरवरी )

आज विश्व के प्रायः सभी देशों में स्काउटिंग क्रियाशील है। इसकी गतिविधियां सर्वत्र सम्भाग में संचालित हो रही है। संसार भर में शायद ही ऐसा कोई इतना बडा आन्दोलन होगा जो स्काउटिंग की भांति विश्वव्यापी हो तथा शिशु, बाल, किशोर युवाओं युवतियों सभी अवस्था वालों को प्रशिक्षण की सुविधाएं प्रदान करता हो। इस आन्दोलन का लक्ष्य बालक एवं बालिकाओं को शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक दृष्टि से इस प्रकार सुदृढ़ बनाना है ताकि वे भविष्य में देश के अच्छे नागरिक बन सके। ऐसे नागरिक बने जिनमें ईश्वर के प्रति आस्था, देश और मानव के प्रति निःस्वार्थ सेवा की भावना जागृत हो। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु यह आन्दोलन गैर सरकारी, गैर राजनैतिक, वर्गहीन एवं किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय, सामाजिक समूह आदि के भेदभाव से रहित है।

इस आन्दोलन के संस्थापक लार्ड बैडन पॉवेल का जन्म 22 फरवरी, 1857 को इंग्लैण्ड में हुआ था। उनके पिता रेनरेंड बैडन पॉवेल प्रोफेसर थे। लेकिन 3 वर्ष की उम्र में ही पिता की मृत्यु हो जाने से इनका भरण पोषण इनकी माता ने किया। मामा ने काफी लगन के साथ इनका अध्ययन करवाया। सन् 1869 में आगे की उच्च शिक्षा हेतु लंदन के चार्टर हाउस नामक स्कूल में प्रवेश दिलाया। विद्यार्थी जीवन में ही इन्हें शिल्पकला एवं चित्रकला का विशेष शौक था। स्काउटिंग के काफी लक्षण इन्हें विद्यार्थी जीवन में दिखाई देने लगे थे। उस समय यह कौन कह सकता था कि यही बालक एक दिन बड़ा होकर स्काउटिंग जैसी पवित्र संस्था की नींव रखेगा। बचपन से ही इन्हें लिखने का भी शौक था। इन्होंने लिखा कि मुझे जंगल के खेल, झाड़ियों में से पेट के बल रेंगकर निकलना, जंगली पशुओं के पदचिन्ह पहचानना अच्छा लगता था।

स्कूली शिक्षा समाप्त कर बैडन पॉवेल ने सेना की एक परीक्षा दी और उसमें अव्वल दर्जा प्राप्त किया। इसी से उन्हें सब लेफ्टिनेंट बनाकर भारत में 13वीं हुर्सास रेजिमेंट में लखनऊ भेज दिया। वहां अपने साहसिक कार्यों से ये पहचाने जाने लगे। सन् 1879 में लेफ्टिनेंट और 1883 में केप्टिन बने। इसके पश्चात् अफ्रीका में इन्होंने काफी समय बिताया। बैडन पॉवेल ने भारत में रह रहे संस्मरणों का रोचक वर्णन अपनी पुस्तक ''इण्डियन मेमोरीज'' में किया। सन् 1887 में बैडन पॉवेल को ए.डी.सी. बनाकर जनरल सह हेनरी केपटाउन (द.अफ्रीका) ले गये। वहां इन्होंने कई साहसिक कार्य किये। वहां जुलू जाति के सरदार डीनिजुलू के विरूद्ध युद्ध किया, उसे परास्त किया तथा उसके गले से सुन्दर चन्दन के बने दानों का हार छीन लिया। स्काउटिंग का उच्च प्रशिक्षण ''हिमालय वुडवैज'' प्राप्त करने वाले लीडर्स को काले धागे में ये दाने (बीड्स) प्रदान करने की परम्परा है।

सन् 1893 में बैडन पॉवेल मेजर बनने के बाद आयरलैण्ड में अपनी रेजिमेंट में लौट आए। वहां एक दिन अचानक उनका ध्यान अपने मित्र के पास रखे सुन्दर डण्डे पर पड़ा, जिस पर माप के चिन्ह अंकित थे। इसी बात को ध्यान में रखते हुए स्काउटिंग में डण्डे (लाठी) की आवश्यकता को अनिवार्यता प्रदान की गई।

स्काउटिंग में बायां हाथ मिलाने की परम्परा भी बड़ी रोचक है। बैडन पॉवेल एक बार अशान्ति कैम्पैन पर पश्चिम अफ्रीका भेजे गये। इनके साथ 860 हब्शी फौजी भी थे। सन् 1895 की यह घटना है। हब्शी फौजियों की सहायता से सड़कों का निर्माण झोपड़ियों का विकास, सन्देश भेजना आदि अनेक साहसिक कार्य किये। वहां के सरदार ने बैडन पॉवेल से बायां हाथ मिलाया। पॉवेल के पूछने पर सरदार से बताया कि बायां हाथ मिलाना यहां वीरता का प्रतीक है। प्रत्येक देशवासी बायां हाथ मिलाने पर गौरव अनुभव करता हैं। इसी बात से प्रभावित होकर स्काउटिंग में आगे चलकर बायां हाथ मिलाने की परम्परा प्रारम्भ हुई।

सन् 1896 में बैडन पॉवेल चीफ ऑफ स्टाफ होकर माता बील लैण्ड गये। वहां इन्होंने अपने मित्र अमरीका के मेजर फौजी स्काउट फ्रेंड वनहम के साथ मिलकर नाइट स्काउटिंग के कई बड़े कार्य किये। इन कार्यों को देखते हुए इन्हें कर्नल बना दिया गया। सन् 1897 में ड्रेगुन गार्ड्स नामक फौज की टुकड़ी के कमाण्डर बनाकर ये भारत भेजे गये। भारत से ये 1899 में इंग्लैण्ड चले गये। वहां आपने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम था– ''एड्स टू स्काउटिंग'' विशेष कर यह पुस्तक फौजी स्काउटों के प्रशिक्षण पर लिखी गई थी। कुछ समय इन्हें ''द साउथ अफ्रीका'' कानस्टबुलरी का दायित्व सौंपा गया, जिसके जवान हैट पहनते थे तथा इस कान्स्टबुलेरी के जवानों का मोटो था– ''बी प्रिपेयर्ड'' तैयार हो। यही मोटो आज स्काउटिंग का है। इन दिनों द. अफ्रिका में बोअरों का अंग्रेजों से युद्ध हुआ। इस युद्ध में बैडन पॉवेल को सेना के 700 सैनिकों की टुकड़ी के साथ भेजा गया। दुश्मनों की संख्या 9 हजार के लगभग थी। अतः स्थिति बड़ी भयंकर बनी थी। बैडन पॉवेल ने एक

नई योजना बनाई, जिसके अनुसार वहां मेफकिंग के 300 चुस्त व साहसी नवयुवकों को एकत्रित करके विभिन्न प्रशिक्षण देकर सात माह तक शत्रुओं का डटकर मुकाबला किया और अंत में युद्ध में विजय प्राप्त की।

लार्ड बैडन पॉवेल इन नवयुवकों और उनके कार्य से अत्यधिक प्रभावित हुए और तभी से उनके मस्तिष्क में यह बात आई कि जब युद्धकाल में ये बालक इतना कार्य कर सकते हैं तो शान्तिकाल में तो और भी अच्छा कार्य कर सकेंगे। अतः इसके लिए इस प्रकार की कोई संस्था अवश्य होनी चाहिए जो उनको विभिन्न उपयोगी प्रशिक्षण देती रहे ताकि उनकी अन्तर्निहित शक्तियों का विकास हो सके।

बैडन पॉवेल के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव रहा, उनकी माता का। फिर भारत व अफ्रीका प्रवास तथा विभिन्न अनुभवों आदि की भागीदारी के कारण बैडन पॉवेल का मस्तिष्क विचारों से परिपूर्ण हो गया। इसी से इन्होंने फौजी स्काउटिंग को नए सिरे से ढालकर प्रयोगात्मक आधार पर तैयार कर बालोपयोगी बनाने की एक बडी योजना तैयारी की, जिसे सभी शिक्षाविदों ने श्रेष्ठ माना। इसी प्रयोग के सफल क्रियान्विति हेतु सर्व प्रथम 25 जुलाई, 1907 को स्काउट बालकों के रूप में 20 छात्रों को लेकर 15 दिन के लिए एक प्रयोगात्मक शिविर प्रारम्भ किया, इंगलिश चैनल में ब्राउन सी द्वीप पर।

उस समय स्काउट शिविर में जो जादू और आकर्षक था, उसे जिसने भी देखा, भूल नहीं सका। समाज के सभी वर्गों से 20 लड़के थे। अमीर एवं गरीब या कोई जातीय भेद नहीं। सब साथ–साथ खेलते, रात को कैम्पफायर करते, नए नए अनुभव प्राप्त करते और इन सबके बीच लकड़ियों के अलाव के पास बैडन पॉवेल बैठकर साहसिक एवं रोचक कहानियां सुनाते हुए बातों बातों में सबके मित्र बन जाते।

इस शिविर की सफलता को देखते हुए सन् 1907 के अन्त तक बैडन पॉवेन ने ''स्काउटिंग फॉर बॉयज'' पुस्तक लिखी और जनवरी 1908 में वह प्रकाशित होते ही इंग्लैण्ड में मौहल्ले–मौहल्ले में स्काउटिंग प्रारम्भ हो गई। अब बैडन पॉवेल ने फौज से अवकाश ग्रहण कर लिया।

मिल्टर विलियम जे.डी. बॉयस नामक एक अमेरिकन सज्जन घने कोहरे में अंधकार में लंदन में अपना मार्ग भूल गये। उन्हें मार्ग में एक चुस्त बालक मिला। बालक ने ही उन्हें मार्ग बताया। उन सज्जन ने उस बालक को आधा पौण्ड देना चाहा। मगर उसने न लेते हुए कह– महोदय, मैं वर्दी में तो नहीं हूँ, लेकिन मैं स्काउट हूँ, इनाम कैसे लूं? महाशय को बड़ा आश्चर्य हुआ और इंग्लैण्ड में स्काउटिंग की सारी जानकारी ली और अमरीका में जाकर सन् 1909 में ही स्काउटिंग प्रारम्भ की।

सितम्बर, 1909 में क्रिस्टल पैलेस लंदन में स्काउटों की प्रथम रैली हुई। रैली में स्काउट मार्च करते हुए बैडन पॉवेल को सलामी देते हुए निकल रहे थे। अंत में लड़कियों का एक दल भी मार्च करता हुआ निकला तो पॉवेल ने उनसे पूछा– तुम कौन हो? उत्तर दिया– ''हम गर्ल स्काउट'' हैं। वे 600 लड़कियां थी। फलस्वरूप लड़कियों के लिए गर्ल गाइडिंग प्रारम्भ की और बैडन पॉवेल ने अपनी बहन मिस एग्नेस को यह कार्य सौंपा।

बैडन पॉवेल ने अनेक अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् अपने जीवन साथी के रूप में अपनाया मिस ओलेव सेंट फ्लेवर सोमस को 1912 में। संयोग से इनका जन्म भी 22 फरवरी, 1889 को ही हुआ था। श्रीमती बैडन पॉवेल ने गाइडिंग के क्षेत्र में काफी योगदान दिया और 1918 में ब्रिटिश साम्राज्य की चीफ गाइड चुनी गई व 1931 में ''वर्ल्ड चीफ गाइड''। सन् 1916 में रूडयार्ड किप्लिंग की कहानियों से प्रेरणा लेकर छोटे बच्चों के लिए कबिंग और सन् 1919 में युवकों के लिए रोवरिंग प्रारम्भ की। सन् 1919 में ही लंदन में गिलविल पार्क उसके मालिक ने बॉय स्काउट एसोसिएशन को भेंट किया जो लीडर्स का प्रमुख प्रशिक्षण केन्द्र बना।

वैसे तो भारत में अंग्रेजों व एंग्लो इण्डियन अफसरों के बालकों के लिए स्काउटिंग 1909 में प्रारम्भ हो गई थी। किन्तु भारतीय बच्चों का इसमें सन् 1916 से प्रवेश हुआ। श्रीराम बाजपेयी व अरूण्डेल ने शाहजहांपुर व बनारस में दो स्काउट दल प्रारम्भ किये। सन् 1918 में पं. मदन मोहन मालवीय एवं डा. हृदय नाथ कुंजरू के साथ वाजपेयी ने सेवा समिति की स्थापना की, जो 1922 तक बैडन पॉवेल संघ के साथ न होकर अपनी राष्ट्रीय भावनाओं के आधार पर अलग से थी। सभी देशी सियासतों में भी स्काउटिंग प्रारम्भ हो गई थी। भारत की स्वतंत्रता के बाद सन् 1950 में यहां की सभी स्काउट संस्थाओं को मिलाकर ''भारत स्काउट व गाइड'' नाम से संगठन की स्थापना हुई। आज सम्पूर्ण भारत में स्काउट गाइड उसी से संबंधित है।

1937 में बैडन पॉवेल जब भारत आए, काफी अस्वस्थ थे, तब डाक्टरों ने पॉवेल को अफ्रीका के अन्तर्गत कीनिया देश की जलवायु सुन्दर दृश्य, मनमोहक सुन्दर शान्त वातावरण में रहने की सलाह दी। तब 1938 में नेरी ग्राम में एक कुटिया बनाकर रहने लगे। यह प्रदेश ठीक भूमध्य सागर पर है। परन्तु समुद्र सतह से छः हजार फीट ऊँचा होने से नैरी का मौसम वर्षभर बसन्त जैसा रहता है। लार्ड बैडन पॉवेल की जीवन यात्रा यहीं रूक गई। इन्होंने अपने अनुभव के आधार पर यहां 38 पुस्तकें लिखी।

स्काउट संस्था का जन्मदाता, इसका महान सेनापति 7 जनवरी, 1941 को चौरासीवें वर्ष में इस संसार से सदा के लिए विदा हो गया, लेकिन अपना नाम अमर कर गया। अपने देहावसान से पूर्व लार्ड बैडन पॉवेल ने कीनिया से संसार भर के स्काउटों के नाम अन्तिम सन्देश दिया–

प्रिय स्काउटों, यदि तुमने कभी ''पीटरमैन'' नामक नाटक देखा हो तो याद होगा कि समुद्री डाकुओं का सरदार अपने बारे में प्रतिदिन मृत्यु का वक्तव्य दिया करता था। उसे भय था कि अन्तिम समय अपनी बात कहने का अवसर मिले या न मिले। यद्यपि मैं अभी मर नहीं रहा, निकट भविष्य में मरूंगा, अतः तुम्हें विदाई का अन्तिम सन्देश देना चाहता हूं कि मेरा जीवन आनन्द पूर्वक बीता है, तुम्हारा भी जीवन आनन्द पूर्वक बीते। अपनी स्काउट प्रतिज्ञा पर डटे रहो, ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।

स्काउटिंग का आरम्भ चाहे किसी भी उद्देश्य से हुआ हो, लेकिन उसका लक्ष्य प्रारम्भ से ही बालक–बालिकाओं में नागरिकता के श्रेष्ठ गुणों का विकास करना है। आज विश्वव्यापी आन्दोलन होने से स्काउटिंग में विभिन्न जातियों, रंगों, देशों व विचार धाराओं में लोगों को मातृत्व के स्नेह सूत्र में बांध देने की शक्ति है। यह आन्दोलन भावनात्मक एकता का सर्वोत्कृष्ट साधन है।

# गतिविधि दर्पण

**मण्डल, जिला, स्थानीय संघ एवं यूनिट स्तर पर की गई गतिविधियों, शिविरों, रैलियों इत्यादि का संक्षिप्त विवरण**

## भरतपुर मण्डल

- भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, भीलवाड़ा पर अनुसूचित जाति/जनजाति स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर

संपन्न हुआ। शिविर में 70 स्काउट तथा 60 गाइड ने भाग लिया। स्काउट जिला ट्रेनिंग काउंसलर श्री हेमेंद्र कुमार सोनी के नेतृत्व में प्रशिक्षक सुरेश चंद्र शर्मा, कैलाश चंद्र दाधीच, रामकन्या जीनगर तथा कांता धोबी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम अनुसार प्रशिक्षण दिया गया।

- भीलवाड़ा में तीन दिवसीय कब बुलबुल उत्सव का आयोजन जिला मुख्यालय पर बालू लाल कालिया के निर्देशन में आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न प्राकृतिक प्रकार की

प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। नन्हे मुन्ने बालक बालिकाओं को पारितोषिक प्रदान कब बुलबुल उत्सव में शिव प्रकाश धोबी, मंजू शर्मा, मधुबाला यादव ने सहयोग प्रदान किया।

- भीलवाड़ा जिला मुख्यालय पर सीडी सेमिनार का आयोजन सी.ओ. स्काउट श्री विनोद घारू के नेतृत्व में संपन्न हुआ। सेमिनार में राधेश्याम शर्मा, दीपक शर्मा, विनोद साहू ने अपने विचारों से रोवर रेंजर को क्म्युनिटी डवलपमेंट के लिए जानकारी देते हुए लाभान्वित किया। समापन समारोह के अवसर पर

समाजसेवी तथा पर्यावरण प्रेमी भीलवाड़ा जिले के स्काउट गाइड के संरक्षक आदरणीय लक्ष्मी नारायण जी दादा डाड ने सभी को शुभकामनाएं प्रेषित की। भीलवाड़ा सी.ओ. गाइड ओम कुमारी तथा सी.ओ. स्काउट विनोद घारू ने सभी का आभार व्यक्त किया।

## जयपुर मण्डल

- 12 जनवरी, 2026 को भारत स्काउट व गाइड, मंडल मुख्यालय, बनीपार्क, जयपुर पर गाइड्स ने विवेकानंद जयंती मनाई। इस अवसर पर सहायक राज्य संगठन आयुक्त (गाइड) श्रीमती नीता शर्मा ने विवेकानंद जी की जीवनी पर प्रकाश

डालते हुए युवाओं को उनका अनुसरण करने हेतु प्रोत्साहित किया। सहायक राज्य संगठन आयुक्त (स्काउट) दामोदर प्रसाद शर्मा ने भी इस अवसर पर वार्ता दी। इस मौके पर सी.ओ. गाइड इंदू तंवर, सी.ओ. स्काउट शरद कुमार शर्मा, स्थानीय संघ सचिव मालवीय नगर के.के. शर्मा, परमेश्वरी चारण एएलटी गाइड तथा दिव्या पारीक और अन्य कई गाइडर्स ने शिरकत की।

- भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ, सांगानेर–जयपुर के तत्वावधान में आयोजित द्वितीय तृतीय सोपान प्रशिक्षण शिविर में सेंट्रल पार्क, सेक्टर–16, प्रतापनगर से यातायात सड़क

सुरक्षा जनचेतना बाबत विशाल रैली निकाली गई। रैली को कोजाराम चौधरी, निदेशक न्यू चौधरी पब्लिक स्कूल हल्दीघाटी मार्ग, डॉ. विमलेश पारीक पूर्व सचिव स्थानीय संघ सांगानेर, राजेंद्र कुमार शर्मा कोषाध्यक्ष स्थानीय संघ सांगानेर व शिविर संचालक छैल बिहारी शर्मा पूर्व सी.ओ. स्काउट ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में बैनर्स व फ्लैक्स के साथ उत्साह से यातायात सुरक्षा संबंधी नारे, स्लोगन बोलते हुए स्काउट गाइड चल रहे थे। रैली को स्काउटर संजय, राठ ओपन ट्रुप बहरोड़, आसाराम जाट, शहजाद पिनारा, गाइडर श्रीमती कलावती शर्मा व प्रतिमा वैष्णव सहित विद्यालयों से आये प्रभारियों ने नेतृत्व प्रदान किया। रैली सेंट्रल पार्क से रवाना होकर सेक्टर–16 प्रतापनगर से भैंरूजी सर्किल होते हुए श्री देहलावास हनुमानजी मंदिर पहुंची। जहां देव दर्शन करके भजन कीर्तन गाकर पुनः शिविर स्थल पहुंची। इस अवसर पर कोजाराम चौधरी द्वारा सभी स्काउट गाइड को अल्पाहार व मधुर पेय उपलब्ध कराया। यातायात सड़क सुरक्षा जनचेतना रैली में 190 से अधिक संभागियों ने भाग लिया। आयोजित शिविर का समापन सर्वधर्म प्रार्थना सभा से हुआ।

❖ भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ, सांगानेर के तत्वावधान में श्री एम.आर.बोहरा उच्च माध्यमिक विद्यालय वाटिका में 21 से 25 जनवरी तक आयोजित द्वितीय तृतीय सोपान प्रशिक्षण शिविर में चतुर्थ दिवस 24 जनवरी को यातायात व सड़क सुरक्षा जनचेतना रैली निकाली गई। मुख्य अतिथि मुकेश

कुमार बैरवा वार्ड पार्षद ने ध्वजारोहण के बाद रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली सामुदायिक भवन, अंबेडकर सर्किल, नगरपालिका भवन तक जाकर वापस शिविर स्थल पर पहुंची। रैली में स्काउट गाइड ने बैनर्स, फ्लैक्स, तख्तियों के साथ उत्साह से यातायात सड़क सुरक्षा संबंधी नारे लगाते हुए भाग लिया। गाइडर डॉ. सरला बैरवा ने बताया कि शिविर में नियम, प्रतिज्ञा, प्रार्थना, झंडागीत, सैल्यूट चिन्ह, कंपास व दिशाज्ञान, खोज चिन्ह, प्राथमिक चिकित्सा, गांठें, बंधन, अनुमान लगाना, नक्शा पढ़ना, ध्वजों की जानकारी, परेड, गार्ड ऑफ ऑनर आदि का प्रभावी प्रशिक्षण दिया गया। शिविर संचालन में छैल बिहारी शर्मा, श्रीमती जया पूनिया व सेवादल गाइड्स प्रितिका बैरवा, लक्ष्मी सैनी, नैनसी कुमारी, बिट्टू कुमारी, खुशबू सैनी आदि ने सहयोग किया। शिविर में स्थानीय विद्यालय सहित राउमावि मोहनपुरा, वाटिका व महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय बीलवा के 65 स्काउट गाइड ने भाग लिया। शिविर का समापन 25 जनवरी को सर्वधर्म प्रार्थना सभा के साथ हुआ। अतिथि प्रधानाचार्य प्रदीप कुमार, कुलदीप व भामाशाह अर्जुन बैरवा ने स्काउट गाइड को प्रेरक उद्‌बोधन देकर देश व समाज की सेवा करने हेतु प्रेरित किया।

## जोधपुर मण्डल

❖ प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी, छत्तीसगढ़ में विश्व युवा दिवस के उपलक्ष्य में 12 जनवरी 2026 को जम्बूरी स्थल जिला बालोद बुदली छत्तीसगढ़ में भारत रत्न स्व.श्री अटल बिहारी

वाजपेयी की स्मृति में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इसमें राज्य मुख्यालय अधिकारियों के निर्देशन एवं सी.ओ. स्काउट सिरोही एम.आर. वर्मा के नेतृत्व में राजस्थान प्रदेश के करीब 53 रोवर रेंजर एवं रोवर लीडर व रेंजर लीडर ने स्वैच्छिक रक्तदान कर एक अनुकरणीय सेवा कार्य किया। रक्तदान हेतु राजस्थान के सभी सी.ओ. ने अपने अपने जिले से सहभागिता कर रहे रोवर रेंजर को प्रोत्साहित किया और सी. ओ. एम.आर. वर्मा ने जम्बूरी स्थल पर रक्तदान के लिए इच्छुक रोवर रेंजर व लीडर्स को रक्तदान संबंधी जानकारी प्रदान कर उनसे स्वैच्छिक रक्तदान करवाया।

❖ भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, सिरोही द्वारा जिला स्तरीय 3 दिवसीय कब बुलबुल उत्सव 22–24 दिसंबर 2025 तक भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय सिरोही में आयोजित किया गया। 24 दिसम्बर को कब बुलबुल उत्सव का समारोह पूर्वक समापन किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि लुम्बा राम चौधरी सांसद जालोर सिरोही थे। अध्यक्षता गणपतसिंह देवडा पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी ने की और विशिष्ट अतिथि मनसा राम मंडिया सचिव स्थानीय संघ सिरोही थे। मुख्य अतिथि लुबाराम चौधरी ने उपस्थित कब बुलबुल को संबोधित करते हुए कहा कि देश की भावी पीढ़ी इन नन्हे मुन्ने बालक बालिकाओं के कंधे पर है। इनको जिस प्रकार से हम तैयार करेंगे यह देश सेवा के लिए अग्रसर होंगे। उन्होंने इस

जिला स्तरीय कब बुलबुल उत्सव के सफल आयोजन व व्यवस्था के लिए सी.ओ. स्काउट और पूरी टीम को बधाई दी और जिला मुख्यालय पर और आवश्यक सुविधाओं के लिए सहयोग देने का आश्वासन दिया। सी.ओ. स्काउट एम.आर. वर्मा ने कब बुलबुल उत्सव का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस कब बुलबुल उत्सव में जिले के विभिन्न विद्यालयों से 125 कब बुलबुल सम्मिलित हुए हैं। अतिथियों का मुख्य गेट पर गार्ड ऑफ ऑनर बैड कलर पार्टी एवं ढाल तलवार भेंट कर स्वागत किया गया। नन्हें मुन्ने कब बुलबुल ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित श्रोताओं का मन विभोर कर दिया। इन कब बुलबुल की अतिथियों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। इससे पूर्व प्रातःकाल इस शिविर का अवलोकन अतिरिक्त जिला कलक्टर डॉ. राजेश गोयल ने किया। उन्होंने उपस्थित कब बुलबुल से परिचय कर उनके दिनचर्या के बारे में जानकारी प्राप्त की। कब बुलबुल उत्सव में स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल झाड़ोली पिण्डवाड़ा, सरस्वती विद्या निकेतन मावि रोहिडा, आदर्श विद्या मंदिर मावि शिवगंज, एच आर एम अंग्रेजी माध्यम जावाल के विद्यालयों से कब बुलबुल सम्मिलित हुए। अतिथियों ने सभी कब बुलबुल को प्रमाण पत्र एवं बाल पेन वितरित किए। इस अवसर पर चिराग रावल मंडल अध्यक्ष अजय भट्ट, वरिष्ठ कार्यकर्ता जीवाराम, सहायक लीडर ट्रेनर कब प्रकाश पूरी, हर चरण पुरोहित, मोहित अग्रवाल, प्रकाश कुमार, हिमांशी कुमारी, निकिता कुमारी, मयंक शर्मा, निखिल कुमार, दिलीप कुमार, अमित कुमार एवं राजकीय महाविद्यालय शिवगंज के रोवर रेंजर व पी एम श्री राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय की गाइड उपस्थित रही।

❖ जोधपुर के केरू शिक्षण संस्थान के स्काउट्स–रेंजर्स के उत्तर पश्चिम रेलवे की पांचवी राज्य स्तरीय रैली में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर लौटने पर भव्य अभिनंदन किया गया। रेलवे स्काउट गाइड की पांचवी स्टेट रैली 24 से 28 दिसंबर 2025 तक रेलवे स्टेडियम जोधपुर में आयोजित हुई। इस स्टेट रैली में उत्तर पश्चिम रेलवे के चारों मंडलों एवं राजस्थान स्टेट भारत स्काउट गाइड के लगभग 400 प्रतिभागियों ने भाग लेकर अपने कौशल का प्रदर्शन किया। राजस्थान दल में स्काउट–रेंजर ने

यूनिट लीडर राजकुमार जोशी व सहायक यूनिट लीडर लोकेश पीडवा के निर्देशन में प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मार्च पास्ट, क्विज प्रतियोगिता, फिजिकल डिस्प्ले, कैंप क्राफ्ट, गेट मेकिंग, बैंड डिस्प्ले, रंगोली, प्रदर्शनी, कैंप फायर सांस्कृतिक इवेंट्स सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। राजस्थान दल द्वारा सभी को रैली के बैज उपहार स्वरूप लगाये गये। इस अवसर पर उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक अमिताभ ने विजेताओं को शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया। मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में महाप्रबंधक ने स्काउट–गाइड द्वारा आयोजित विभिन्न एडवेंचर गतिविधियों एवं हस्तकला से निर्मित वस्तुओं का अवलोकन किया और मुक्त कंठ से प्रशंसा की। कैंप फायर में यूनिट लीडर राजकुमार जोशी ने राजस्थानी वाद्य यंत्र मोरचंग, भपंग, घुंघरू अपने मुंह से बजाकर कार्यक्रम में समा बांध दिया। संस्थान के निदेशक हनुमान राम चौधरी एवं महाविद्यालय की प्राचार्या पूनम चौधरी ने सभी को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की।

## कोटा मण्डल

❖ भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, झालावाड़ पर आयोजित चार शिविर के शिविरार्थियों को 22 जनवरी को

प्रेरणा जन कल्याण संस्थान झालावाड़ के अध्यक्ष कृष्ण मोहन देवड़ा ने स्वास्थ्य चेतना, नशा मुक्ति गीत व नशा करने के दुष्प्रभाव बताए तथा नशे से बचने के तरिकों से शाला के सभी बच्चों को नशा न करने की प्रेरणा दी। इस अवसर कोटा के सहायक राज्य संगठन आयुक्त दिलीप माथुर ने नशे के दुष्प्रभाव बताये व प्रतिज्ञा कराई। सभी ने प्रतिज्ञा ली कि मैं यथाशक्ति ईश्वर धर्म व अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करुगाँ व कभी भी गुटके, जर्दे, बीड़ी, सिगरेट शराब का, तम्बाकू युक्त मंजन का सेवन नही करूँगा व जो करता है उससे छुड़ाने के प्रयास करूँगा। इस अवसर पर रामकृष्ण शर्मा सी.ओ. स्काउट, व जयपुर से आई शिविर संचालिका बसन्ती शर्मा, सुशीला शर्मा, व अन्य सभी स्टाफ का विशेष सहयोग रहा। सभी ने आनंद से देवड़ा के गीतों को गाया। अन्त में सभी को हल्दीघाटी नशा मुक्ति केन्द्र की जानकारी दी।

## उदयपुर मण्डल

❖ भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, राजसमन्द के स्काउट व गाइड का तृतीय सोपान प्रशिक्षण एवं जांच शिविर का समापन शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों के आथित्य में रंगारंग कार्यक्रम केम्प फायर के साथ सम्पन्न हुआ। राजसमन्द मुख्यालय के स्थानीय संघ सचिव धर्मेन्द्र गुर्जर अनोखा ने बताया कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एमडी एवं राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड स्थानीय संघ राजसमन्द के तत्वावधान में आयोजित स्काउट गाइड का तृतीय सोपान प्रशिक्षण एवं जांच शिविर विद्यालय के प्रांगण में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी रामेश्वर लाल बाल्दी के मुख्य आतिथ्य एवं सी.बी.ओ. राजसमन्द उषा टेलर के अति विशिष्ट आतिथ्य एवं सी.ओ. स्काउट राजसमन्द सुनिल कुमार सोनी के विशिष्ट आतिथ्य में हर्षोल्लास से रंगारंग कार्यक्रम के साथ समापन हुआ। समापन समारोह के अवसर पर उषा टेलर ने व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने एमडी विद्यालय की राज्यपाल अवार्ड प्राप्त गाइड एवं राष्ट्रीय स्तर पर फुटबॉल खेलने वाली बालिकाओं का ईकलाई से अभिनंदन किया। इस प्रशिक्षण शिविर में स्काउट गाइड को दक्ष–प्रशिक्षकों द्वारा नियम, प्रार्थना, झण्डा गीत, प्रतिज्ञा, टेन्ट लगाना, स्काउट आन्दोलन के इतिहास की जानकारी गेजेट्स बनाना, गांठे, खोज के चिन्ह, कम्पास की जानकारी, सिटी के संकेत, स्काउट गाइड पोशाक की जानकारी, जनरल सैल्युट, विभिन्न प्रकार की क्लेप, निनाद, गीत, बी.पी.सिक्स व्यायाम, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय एवं स्काउट ध्वज की जानकारी, अनुमान लगाना, प्राथमिक चिकित्सा, विद्यालय एवं समाज में अनुकरणीय सेवा कार्यों के बारे में विशेष प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में सहायक शिविर संचालक स्काउट के रूप में रोशन लाल रेगर एवं सहायक शिविर संचालिका के रूप में उर्मिला पुरोहित ने अपने दायित्व का निर्वहन किया। संचालक दल मण्डल में उच्च योग्यता धारी हिमालय वुडवेज ट्रेंड प्रशिक्षक रामसिंह चौहान, सचिव स्थानीय संघ देवगढ़ राधेश्याम राणा, सर्वेश्वर बडवाल, नारायण लाल कलाल, राजकुमार त्रिपाठी, डॉ. फरजाना छीपा, निशा जांगिड़, पार्वती माली, सीमा कुमावत, मीना शर्मा, रंजना कुमावत, रोवर चेतन बैरवा व माधव पालीवाल ने अपनी सराहनीय सेवा प्रदान की। शिविर का प्रतिवेदन स्थानीय संघ सचिव धर्मेन्द्र गुर्जर अनोखा ने प्रस्तुत किया व कार्यक्रम का संचालन राधेश्याम राणा ने किया व आभार सहायक शिविर संचालक रोशन लाल रेगर ने व्यक्त किया।

❖ राजसमन्द जिले में 17 जनवरी को आयोजित कार्यक्रम में ''देने वाले श्रीनाथजी पाने वाले श्रीनाथजी'' यह विचार एमडी के सभागार में बालकों को सम्बोधित करते हुवे शिक्षाविद् कृष्ण गोपाल गुर्जर ने रखे। वे आर्थिक रूप से कमजोर बालक बालिकाओं को ऊनी वस्त्र, एवं सहायक पाठ्य सामग्री वितरण करने हेतु राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एमडी में पहुंचे थे। विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं पंचायत शिक्षा अधिकारी ग्राम पंचायत एमडी के भानु कुमार वैष्णव ने बताया की समारोह की अध्यक्षता अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (माशि) राजसमन्द के छगन लाल पूर्बिया ने की, मुख्य अतिथि राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त पर्यावरण प्रेमी, एवं पशु पक्षियों के मित्र कृष्ण गोपाल गुर्जर थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी राजसमन्द के जिला अध्यक्ष जगदीश पालीवाल, पूर्व चेयरमैन नगर परिषद राजसमन्द अशोक रांका, समाज सेवी यशवन्त पुर्बिया ने मंच को सुशोभित किया। विद्यालय के वरिष्ठ

शारीरिक शिक्षक एवं राजसमन्द स्थानीय संघ सचिव धर्मेन्द्र गुर्जर अनोखा ने बताया की सर्वप्रथम अतिथि महानुभावों के विद्यालय पहुंचने पर एमडी स्काउट ट्रुप एवं गाइड कम्पनी के स्काउट गाइड ने गार्ड ऑफ ऑनर देकर सम्मान किया। तत्पश्चात मंचासीन अतिथियों ने मां शारदे के सम्मुख दीप अगरबत्ती कर कार्यक्रम की शुरुआत की। शब्द सुमनों से प्रधानाचार्य वैष्णव ने आतिथ्य सत्कार किया। विद्यालय के वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक एवं प्रधानाचार्य ने अतिथि देवोः भवः की परम्परा का निर्वहन किया, साथ ही कृष्ण गोपाल गुर्जर को एक छवि भेंट की। कार्यक्रम के अगले क्रम में मंचासीन अतिथियों ने एमडी विद्यालय के राज्यपाल अवार्ड प्राप्त स्काउट गाइड व कक्षा 9 से 12 तक के सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 12 प्रतिभावान विद्यार्थियों को स्टडी टेबल देकर सम्मानित किया। उसके पश्चात् कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के बालक बालिकाओं को ऊनी वस्त्र, स्वेटर, हाथ के मौजे, स्ट्रूमेंट बॉक्स, कम्बल व पक्षी किट वितरित किए। साथ ही पोषाहार बनाने वाली बाइयों व सहायक कर्मचारियों को कम्बल व सभी अध्यापकों को श्रीनाथजी की छवि भेंट की। कार्यक्रम के कॉर्डिनेटर अनोखा ने बताया कि कृष्ण गोपाल गुर्जर ने इस सत्र में राजसमन्द जिले के 21 राजकीय विद्यालयों में इस सर्दी के मौसम में बालकों को जर्सी उपलब्ध कराई। साथ ही शनिवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एमडी रा.उ.प्रा. वि. नान्दोली, रा.उ.प्रा.वि. अमरपुरा, रा.उ.मा.वि. बामनियां कलां, विद्यालय में 267 बालकों को जर्सी, 30 प्रतिभावान विद्यार्थियों को स्टडी टेबल, 340 पक्षी किट, 70 स्टेशनरी किट, 250 हाथ के मौजे व 150 कम्बल उपलब्ध कराई। कार्यक्रम का संचालन धर्मेन्द्र गुर्जर अनोखा ने किया। इस अवसर पर विद्यालय की निशा जांगिड, पुर्णिमा राजपूत, अनिता सैनी, बाल कृष्ण पालीवाल, गोपाल कुमावत, कौशल सनाढ्य, सुनिल गोदारा, सुमनलता लाहोटी, गायत्री शर्मा, शांति शर्मा उपस्थित थे।

❖ भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ, चित्तौड़गढ़ का वार्षिक अधिवेशन अर्जुन मूंदड़ा की अध्यक्षता एवं इन्द्र लाल आमेटा उपाध्यक्ष एवं लीडर ट्रेनर, चन्द्र शंकर श्रीवास्तव सी.ओ. स्काउट, ओमप्रकाश तोषनीवाल सहायक निदेशक समाज कल्याण, लक्ष्मी नारायण दशोरा चैयरमेन, सतीश दशोरा अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा जिला कमिश्नर कब, शंभू लाल सोमानी प्रभारी कमिश्नर स्काउट, विनोद राठी प्रभारी कमिश्नर गाइड, अखिलेश श्रीवास्तव प्रभारी कमिश्नर निजी संस्थान के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। शाब्दिक स्वागत शंभू लाल सोमानी प्रभारी कमिश्नर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारा किया गया तथा अपने उद्‌बोधन में प्रत्येक विद्यालय में स्काउट गाइड गतिविधियों का संचालन समुचित रूप से हो यह निर्देश प्रदान किये गये। पंकज दशोरा सचिव स्थानीय संघ चित्तौड़गढ़ द्वारा गत अधिवेशन के कार्यवृत का पाठन कर वर्तमान सत्र के अभी तक सम्पन्न

कार्यक्रम के साथ आगामी कार्य योजना के बारे में सदन को अवगत करा अनुमोदन किया गया। कोषाध्यक्ष राजकुमार सुखवाल ने गत सत्र के आय व्यय के बारे में सदन को अवगत करा अनुमोदन प्राप्त किया। वर्तमान सत्र के अनुमानित आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत कर सदन से स्वीकृति प्राप्त की गई। चतर सिंह राजपूत ने अपने उद्‌बोधन में स्काउटिंग के विभिन्न प्रगति सोपान के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई। इन्द्र लाल आमेटा द्वारा स्काउटिंग संचालन में संस्था प्रधान के दायित्वों को विस्तार से बताया गया। चन्द्र शंकर श्रीवास्तव ने ग्रुप में स्काउट गतिविधियों के प्रभावी संचालन एवं बालकों के गुणात्मक प्रगति हेतु समुचित प्रयास करने का आह्वान किया। ओमप्रकाश तोषनीवाल सहायक निदेशक बाल अधिकारिता विभाग ने कहा कि बाल विवाह मुक्त भारत का स्वप्न स्काउट गाइड के सक्रिय सहयोग एवं वातावरण निर्माण से ही संभव है। देवकीनन्दन वैष्णव क्वाटर मास्टर व सहायक सचिव ने स्थानीय संघ कार्यालय में भौतिक विकास की जानकारी प्रदान करते हुए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में चित्तौड़गढ़ ब्लाक के संस्था प्रधान के साथ हेमेंद्र सोनी, भगवती लाल शर्मा, आजीवन सदस्य, साधारण सदस्य, कार्यकारणी सदस्य उपस्थित रहे तथा स्काउटर हेमंत पुरोहित, कालूलाल नायक, अनिल कुमार दक, मनीष दशोरा, सत्यनारायण शर्मा, बिनाका गर्ग गाइडर, नारायण लाल कुमावत, राजलक्ष्मी चौहान, पिंकी बैरवा, इशरत अली गाइड ने सहयोग प्रदान किया।

# 78वां सेना दिवस परेड

10 से 15 जनवरी 2026 तक जयपुर में ऐतिहासिक 78वां सेना दिवस परेड का आयोजन किया गया, जो पहली बार दिल्ली के बाहर और आम जनता के लिए जगतपुरा, जयपुर के महल रोड पर हुई, जिसमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह मुख्य अतिथि थे और 'भैरव बटालियन' ने पहली बार आधुनिक हथियारों के साथ मार्च पास्ट किया, जिसमें सेना की ताकत और आधुनिक तकनीक का प्रदर्शन किया गया। 15 जनवरी की संध्या को जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में आयोजित शौर्य संध्या पर राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, जिला जयपुर के लगभग 500 स्काउट गाइड्स, रोवर रेंजर्स ने शिरकत कर राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत कार्यक्रमों का अवलोकन किया।

इस मौके पर आर्मी परेड, न्यू टेक्नोलॉजी, रोबोटिक, डॉग्स आदि द्वारा की गई परेड तथा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया। आर्मी के विभिन्न एवं आला अफसरों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की। देश पर शहीद हुए नौजवानों की वीरांगनाओं को मुख्य अतिथि रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा सम्मानित किया गया। 1961 से लेकर मई 2025 तक देश रक्षा के लिए किए गए विभिन्न ऐतिहासिक युद्धों को बड़े–बड़े पर्दे पर प्रदर्शित कर बालक बालिकाओं में देश प्रेम की भावना को उत्तरोत्तर प्रबल किया गया।

इस अवसर पर देश के वीरों की तस्वीरों को तथा विभिन्न सांस्कृतिक एवं धार्मिक तस्वीरों का ड्रोन शो द्वारा खुले आसमान में प्रदर्शन किया गया। कलाकारों ने तलवारबाजी मलखंभ इत्यादि का प्रदर्शन किया। इस मौके पर आर्मी चीफ ने अहम भूमिका निभाकर पहलगाम अटैक एवं ऑपरेशन सिंदूर के बारे में जानकारी दी।

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। राजस्थान के राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे इस मौके उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी ने भारतीय सेना की प्रशंसा करते हुए देश के वीरों की अहमियत को सराहा और किस तरह हमारे देश के नौजवान देश की रक्षा में अपना सर्वस्य दाव पर लगा देते हैं, के बारे में बालक बालिकाओं को बताते हुए जनता को उद्बोधन दिया। रक्षा मंत्री जी ने सरकार द्वारा देश की रक्षा के लिए किए गए बड़े–बड़े फैसलों का भी इस अवसर पर खुलकर जिक्र किया। इस शानदार संध्या में बालक बालिकाओं द्वारा वंदे मातरम और भारत मां की जय जयकार से पूरा स्टेडियम गूंजायमान हो गया।

# लुई ब्रेल जयंती पर दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का सम्मान

भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, चित्तौड़गढ़ द्वारा आयोजित सेवापूर्व शिक्षकों के आवासीय शिविर के अंतर्गत चित्तौड़गढ़ के स्काउटर हेमेन्द्र कुमार सोनी, संदर्भ व्यक्ति (सीडब्ल्यूएसएन) की नवाचारी पहल के अंतर्गत समग्र शिक्षा एवं दृष्टिहीन क्रीड़ा परिषद, अजमेर के सहयोग से लुई ब्रेल जयंती के अवसर पर एक प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिले में इस प्रकार का यह द्वितीय प्रयास रहा, जिसे समावेशी शिक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजेन्द्र कुमार शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.) चित्तौड़गढ़ एवं अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में चन्द्रशंकर श्रीवास्तव, सी.ओ. स्काउट उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत लुई ब्रेल की जयंती के अवसर पर उनके छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर की गई। स्वागत उद्बोधन में लुई ब्रेल के जीवन, उनके संघर्ष, दृष्टिबाधा की घटना तथा ब्रेल लिपि के आविष्कार की प्रेरक यात्रा पर प्रकाश डाला गया।

इस अवसर पर ब्रेल लिपि पर आधारित एक संक्षिप्त संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रशिक्षक सत्यनारायण शर्मा, शिविरार्थी हरिप्रिया गौड़ सहित अन्य प्रतिभागियों ने अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही सेवापूर्व शिक्षकों को समग्र शिक्षा के अंतर्गत दृष्टिबाधित विद्यार्थियों हेतु राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा किए जा रहे प्रयासों एवं सुविधाओं की जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के अंत में राजकीय विद्यालयों के सफल दृष्टिबाधित पूर्व विद्यार्थियों नंदलाल लौहार, मुकेश जाट, सोनु मेधवाल, कृष्ण पंचोली, देवी लाल, कन्हैयालाल तथा राजकीय सेवा में चयनित नंदकिशोर एवं दिनेश रावत को मेवाड़ी पाग, शॉल, उपरणा, श्रीफल एवं प्रमाण–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में शिक्षकों से विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन हेमेन्द्र कुमार सोनी ने किया, स्वागत चतर सिंह राजपूत ने तथा आभार सत्यनारायण सोमानी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में अनेक शिक्षक, प्रशिक्षक एवं परिजन उपस्थित रहे।

पर्यटन स्थल

# कालीबंगा

## हड़प्पा संस्कृति का तीसरा बड़ा नगर

प्रस्तोता - स्काउट गाइड ज्योति डेस्क

कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले का एक प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्थल है। कालीबंगा हनुमानगढ़ जिले में स्थित है। यहां हड़प्पा सभ्यता के बहुत दिलचस्प और महत्वपूर्ण अवशेष मिले हैं। कालीबंगा एक छोटा नगर था। यहां एक दुर्ग मिला है।

राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित कालीबंगा स्थान पर उत्खनन द्वारा (1961 ई. के मध्य किए गए) 26 फिट ऊँची पश्चिमी थेड़ी (टीले) से प्राप्त अवशेषों से विदित होता है कि लगभग 4500 वर्ष पूर्व यहाँ सरस्वती नदी के किनारे हड़प्पा कालीन सभ्यता फल–फूल रही थी। कालीबंगा गंगानगर जिले में सूरतगढ़ के निकट स्थित है। यह स्थान प्राचीन काल की नदी सरस्वती (जो कालांतर में सूख कर लुप्त हो गई थी) के तट पर स्थित था। यह नदी अब घग्घर नदी के रुप में है। सतलज उत्तरी राजस्थान में समाहित होती थी। सूरतगढ़ के निकट नहर–भादरा क्षेत्र में सरस्वती व हृषद्वती का संगम स्थल था। स्वयं सिंधु नदी अपनी विशालता के कारण वर्षा ऋतु में समुद्र जैसा रुप धारण कर लेती थी जो उसके नामकरण से स्पष्ट है। सरस्वती उपत्यका (घाटी) सरस्वती एवं हृषद्वती के मध्य स्थित 'ब्रह्मवर्त' का पवित्र प्रदेश था जो मनु के अनुसार 'देवनिर्मित' था। धनधान्य से परिपूर्ण इस क्षेत्र में वैदिक ऋचाओं का उद्बोधन भी हुआ। सरस्वती (वर्तमान में घग्घर) नदियों में उत्तम थी तथा गिरि से समुद्र में प्रवेश करती थी। ऋग्वेद (सप्तम मण्डल, 2/95) में कहा गया है–'एकाचतत् सरस्वती नदी नाम शुचिर्यतौ। गिरभ्यः आसमुद्रात।।' सतलज उत्तरी राजस्थान में सरस्वती में समाहित होती थी।

सी.एफ. ओल्डन ने ऐतिहासिक और भौगोलिक तथ्यों के आधार पर बताया कि घग्घर हकरा नदी के घाट पर ऋग्वेद में बहने वाली नदी सरस्वती 'हृषद्वती' थी। तब सतलज व यमुना नदियाँ अपने वर्तमान पाटों में प्रवाहित न होकर घग्घर व हसरा के पाटों में बहती थीं। महाभारत काल तक सरस्वती लुप्त हो चुकी थी और 13वीं शती तक सतलज, व्यास में मिल गई थी। पानी की मात्रा कम होने से सरस्वती रेतीले भाग में सूख गई थी।

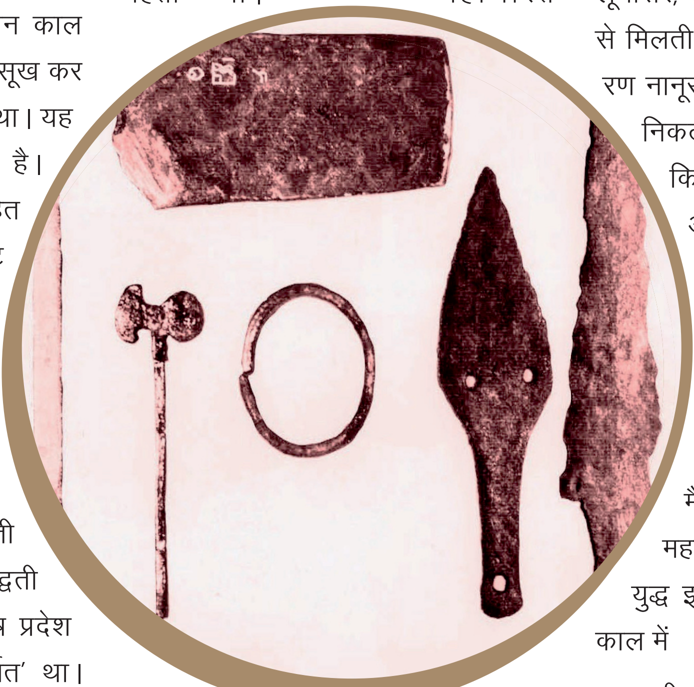

इतिहासवेत्ता वाकणकर के अनुसार सरस्वती नदी के तट पर 200 से अधिक नगर बसे थे, जो हड़प्पाकालीन हैं। इस कारण इसे 'सिंधुघाटी की सभ्यता' के स्थान पर 'सरस्वती नदी की सभ्यता' कहना चाहिए। मूलतः घग्घर–हकरा ही प्राचीन सरस्वती नदी थी जो सतलज और यमुना के संयुक्त गुजरात तक बहती थी जिसका पाट (चौड़ाई) ब्रह्मपुत्र नदी से बढ़कर 8 कि. मी. था। वाकणकर के अनुसार सरस्वती नदी 2 लाख 50 हजार वर्ष पूर्व नागौर, लूनासर, आसियाँ, डीडवाना होते हुए लूणी से मिलती थी जहाँ से वह पूर्व में कच्छ का रण नानूरण जल सरोवर होकर लोथल के निकट संभात की खाड़ी में गिरती थी, किंतु 40 हजार वर्ष पूर्व पहले भूचाल आया जिसके कारण सरस्वती नदी मार्ग परिवर्तन कर घग्घर नदी के मार्ग से होते हुए हनुमानगढ़ और सूरतगढ़ के बहावलपुर क्षेत्र में सिंधु नदी के समानान्तर बहती हुई कच्छ के मैदान में समुद्र से मिल जाती थी। महाभारत काल में कौरव–पाण्डव युद्ध इसी के तट पर लड़ा गया। इसी काल में

सरस्वती के विलुप्त होने पर यमुना गंगा में

मिलने लगी।

### कालीबंगा से प्राप्त प्रागैतिहासिक अवशेष

1922 ई. में राखलदास बैनर्जी एवं दयाराम साहनी के नेतृत्व में मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा (अब पाकिस्तान में लरकाना जिले में स्थित) के उत्खनन द्वारा हड़प्पा या सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष मिले थे जिनसे 4500 वर्ष पूर्व की प्राचीन सभ्यता का पता चला था। बाद में इस सभ्यता के लगभग 100 केन्द्रों का पता चला जिनमें राजस्थान का कालीबंगा क्षेत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मोहनजोदड़ो व हड़प्पा के बाद हड़प्पा संस्कृति का कालीबंगा तीसरा बड़ा नगर सिद्ध हुआ है। जिसके एक टीले के उत्खनन द्वारा निम्नांकित अवशेष स्रोत के रुप में मिले हैं जिनकी विशेषताएँ भारतीय सभ्यता के विकास में उनका योगदान स्पष्ट करती हैं –

✠ ताँबे के औजार व मूर्तियाँ– कालीबंगा में उत्खन्न से प्राप्त अवशेषों में ताँबे (धातु) से निर्मित औजार, हथियार व मूर्तियाँ मिली हैं, जो यह प्रकट करती है कि मानव प्रस्तर युग से ताम्रयुग में प्रवेश कर चुका था।

✠ अंकित मुहरें– कालीबंगा से सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता की मिट्टी पर बनी मुहरें मिली हैं, जिन पर वृषभ व अन्य पशुओं के चित्र व दृंधव लिपि में अंकित लेख है जिन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। वह लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।

✠ ताँबे या मिट्टी की बनी मूर्तियाँ, पशु–पक्षी व मानव कृतियाँ मिली हैं जो मोहनजोदड़ो व हड़प्पा के समान हैं। पशुओं में बैल, बंदर व पक्षियों की मूर्तियाँ मिली हैं जो पशु–पालन, व कृषि में बैल का उपयोग किया जाना प्रकट करता है।

✠ तोल के बाट– पत्थर से बने तोलने के बाट का उपयोग करना मानव सीख गया था।

✠ बर्तन–मिट्टी के विभिन्न प्रकार के छोटे–बड़े बर्तन भी प्राप्त हुए हैं जिन पर चित्रांकन भी किया हुआ है। यह प्रकट करता है कि बर्तन बनाने हेतु 'चारु' का प्रयोग होने लगा था तथा चित्रांकन से कलात्मक प्रवृत्ति व्यक्त करता है।

✠ आभूषण– स्त्री व पुरुषों द्वारा प्रयुक्त होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित अनेक आभूषण कंगन, चूड़ियाँ आदि मिलें हैं।

✠ नगर नियोजन– मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति कालीबंगा में भी सूर्य से तपी हुई ईटों से बने मकान, दरवाजे, चौड़ी सड़कें, कुएँ, नालियाँ आदि पूर्व योजना के अनुसार निर्मित हैं जो तत्कालीन मानव की नगर–नियोजन, सफाई–व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था आदि पर प्रकाश डालते हैं।

✠ कृषि–कार्य संबंधी अवशेष– कालीबंगा से प्राप्त हल से अंकित रेखाएँ भी प्राप्त हुई हैं जो यह सिद्ध करती हैं कि यहाँ का मानव कृषि कार्य भी करता था। इसकी पुष्टि बैल व अन्य पालतू पशुओं की मूर्तियों से भी होती हैं।

✠ खिलौने– धातु व मिट्टी के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं।

✠ धर्म संबंधी अवशेष– मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति कालीबंगा से मातृदेवी की मूर्ति नहीं मिली है। इसके स्थान पर आयताकार वर्तुलाकार व अंडाकार अग्निवेदियाँ तथा बैल, बारसिंघे की हड्डियाँ यह प्रकट करती है कि यहाँ का मानव यज्ञ में पशु–बलि भी देता था।

✠ दुर्ग (किला)– सिंधु घाटी सभ्यता के अन्य केन्द्रो से भिन्न कालीबंगा में एक विशाल दुर्ग के अवशेष भी मिले हैं जो यहाँ के मानव द्वारा अपनाए गए सुरक्षात्मक उपायों का प्रमाण है।

उपर्युक्त अवशेषों के स्त्रोतों के रुप में कालीबंगा का सिंधु–घाटी सभ्यता में अपना विशिष्ट स्थान है। कुछ पुरातत्वेत्ता तो सरस्वती तट पर बसे होने के कारण कालीबंगा सभ्यता को 'सरस्वती घाटी सभ्यता' कहना अधिक उपयुक्त समझते हैं क्योंकि यहाँ का मानव प्रागैतिहासिक काल में हड़प्पा सभ्यता से भी कई दृष्टि से उन्नत था। खेती करने का ज्ञान होना, दुर्ग बना कर सुरक्षा करना, यज्ञ करना आदि इसी उन्नत दशा के सूचक हैं। वस्तुतः कालीबंगा का प्रागैतिहासिक सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में यथेष्ट योगदान रहा है।

हमारा स्वास्थ्य

# तुलसी

संकलनकर्ता – डॉ. पी.सी. जैन
राज्य सचिव

गतांक से आगे...

## नाक के भीतर घाव का उपचार

तुलसी के रस में कपूर मिलाकर फुरैरी से नाक में फुंसी पर लगायें। कान के दर्द में भी डाल सकते हैं (कान में)।

**पीनस** – कनपटी में सूजन आ जाने पर तुलसी दल और एरंड की कोपलें बराबर मात्रा में लेकर पीस लें। चुटकी भर सेंधा नमक भी मिला लें। कनपटी पर लेप करें। सूजन और दर्द गायब हो जायेगा।

**सुनाई कम देना** – काली तुलसी का रस गुनगुना करके तेल की तरह कानों में सुबह–शाम डालें। 8–10 दिन में सुनाई देने लगेगा।

## गला बैठना

उपचार – तुलसी के पत्ते आँच पर तपाकर उसमें थोड़ा सा नमक लगाकर चाट लीजिए।

## गले का दर्द

उपचार – तुलसी के पत्ते देशी घी या शुद्ध सरसों के तल में सेंककर साथ कपड़े में लपेट लें और गले के चारों तरफ बाध लें। गले के दर्द में शीघ्र आराम मिलता है।

## मुँह के छाले

तुलसी के चार और चमेली के एक पत्ते को धीरे–धीरे चबाकर चूसते रहें। फिर खालें। सुबह–शाम 4–5 दिन ऐसा करने से मुँह के छाले बिल्कुल समाप्त हो जाते हैं।

## दाँत के कीड़े

वन तुलसी के रस को कान में टपकाने से भी दाँतों के कीड़े निकल जाते हैं।

## बच्चों के दाँत

तुलसी के छाया में सुखाये पत्तों के दो ग्राम चूर्ण को अनार के शरबत में घोलकर बच्चे को नियमित रूप से सुबह–शाम पिलाते रहें। दाँत बड़ी आसानी से निकल आयेंगे।

## पक्षाघात

तुलसी के पत्तों को उबालें और उनकी भाप शरीर के सुन्न अंगों को लगने दें साथ ही तुलसी के तेल की मालिश करें।

तुलसी के बीज सिल पर बारीक पीसकर दिन में 3–4 बार लेप करें। इससे रक्त संचार होने लगेगा। तुलसी के पत्तों और बीजों का काढ़ा बनाकर उसमें थोड़ी सी खांड मिलाकर रोगी को सुबह दोपहर शाम नियमित पिलाते रहें। कुछ दिनों में ही सुन्न शरीर सामान्य हो जायेगा।

## श्वसन संस्थान के रोग

**जुकाम** – छोटी इलायची के कुल दो दाने और एक ग्राम तुलसी बौर (मंजरी) डालकर काढ़ा बनायें और दूध चीनी डालकर चाय की तरह पिला दें। दिन में 4–5 बार भी पिला देंगे तो चाय की तरह खुश्की नहीं करेगी। मगर जुकाम सर्दी को जड़ से खत्म कर देगी।

## सूखी खाँसी या फेंफड़ों के रोग

खाँसी (सूखी) भी हो और छाती भी घरघराने लगे तो तुलसी के बीज और मिश्री बराबर मात्रा में पीसकर 3–3 ग्राम फाँके और पानी पी लें। चौबीस घंटों में न खाँसी रहेगी, न खुश्की, न सीना घरघरायेगा और न सीटियों जैसी आवाज निकलेगी।

## बलगम बढ़ जाना (बलगमी खाँसी)

काली तुलसी का रस एक–एक चम्मच सुबह, दोपहर और रात को पिलायें।

## निमोनिया

तुलसी के तेल की सीने पर मालिश करें। साथ ही पाँच तुलसी दल और पाँच काली मिर्च पीसकर रस पिलायें। सर्दी का असर तुरंत दूर हो जायेगा।

## जूड़ी बुखार

5 काली मिर्च और तुलसी दल को 250 ग्राम पानी में उबालकर पिलाने से तुरंत असर होता है।

## पुराना मलेरिया

सात तुलसी दल और सात काली मिर्च दोनों को दाढ़ के नीचे दबा कर चबाते व चूसते रहें। दिन में तीन–चार बार यह प्रक्रिया दोहराने से महीनों पुराना मलेरिया भी भाग जाता है।

## लू लगना

एक चम्मच तुलसी के रस में देशी शक्कर मिलाकर एक–एक घंटे बाद देते रहें। यह न समझें तुलसी रस गर्म होता है तो हानि पहँचायेगा। आराम आने के बाद धूप में निकलना हो तो भी तुलसी रस में नमक मिलाकर पियें। इससे लू लगने की आशंका नहीं रहेगी। प्यास भी कम लगेगी और चक्कर भी नहीं आयेंगे।

## टूटा हुआ बदन

तुलसी दल की चाय बनाकर पियें। घर में अगर चाय की जगह तुलसी दल सुखाकर रख लें तो कफ, सर्दी, थकान और बुखार या सिर दर्द पास भी नहीं फटकेंगे।

## बाल झड़ना

तुलसी के 21 पत्ते और आँवले का 10 ग्राम चूर्ण एक कटोरी में भिगोकर रख दें। 15 मिनट बाद इस पानी से सिर को अच्छी तरह से भिगो दें और जड़ों में अच्छी तरह रस–बस जाने दें। 15 मिनट बाद सिर सूख जायेगा। सिर धोकर नारियल का तेल लगायें। रोजाना सेवन करें। बाल काले बने रहेंगे और जड़ें भी मजबूत हो जायेंगी।

### बालतोड़

पीपल की कोंपल और तुलसी दल एक साथ पीसकर बाल तोड़ पर लगाने से सारे विकार शांत हो जाते हैं। इस लेप के आगे सभी दवाएं और इंजेक्शन नगण्य हैं।

### दाग चकत्ते

काली तुलसी के पत्ते, काल करौटी के पत्ते और नींबू का रस समान मात्रा में किसी तांबे के बर्तन में डालकर धूप में रख दें, जब गाढ़ा हो जाये तो दाग–चकत्ते पर लेप करें। इससे मुंहासे और सफेद दाग भी नष्ट हो जाते हैं। झाइयाँ व काले दाग भी खत्म हो जाते हैं।

### सफेद दाग

तुलसी का दोहरा इस्तेमाल करें, सूखे पत्तों का चूर्ण सुबह, दोपहर, शाम को रोजाना लें। साथ साथ तुलसी के नीचे की मिट्टी तुलसी रस में घोलकर उबटन की तरह दागों पर लगायें, इससे त्वचा इकरंग होने लगेगी।

### खुजली

लक्षण – ऊँगलियों की पोरों, शरीर पर, हाथों की घाइयों में छोटे–छोटे दानों का निकलना, उनमें पीप पड़ जाना, खारिश होना।

उपचार – तुलसी के पत्तों का रस 100 ग्राम, तिल का तेल 50 ग्राम दोनों को मिलाकर मंदी आँच पर पका लें। और शीशी में भरकर रख लें। जहां खुजली के दाने हो वहां लगायें। घावों में भरा मवाद बहुत शीघ्र खुश्क हो जायेगा। उनमें खारिश भी नहीं होगी।

### रक्त विकार

तुलसी का पंचांग– पत्ते, बीज, जड़, फूल व लकड़ी को समान मात्रा में लेकर कूट–पीस कर छाया में सुखा लें। इसे तीन ग्राम रोज सुबह ताजा पानी के साथ निगल लें। रक्त के सारे दोष शांत हो जायेंगे।

### गांठ निकलना

तुलसी और मूली के बीज, कनेर की जड़, सहजन के बीज और श्वेत सरसों बराबर मात्रा में लेकर पीसिए और गाँठ पर लेप दीजिए। तीन–चार लेप से त्वचा के विकार दूर हो जायेंगे और गांठे नहीं निकलेंगी।

### पुरूषों के रोग व गुप्त रोग

**कमजोरी –**

लक्षण – परिश्रम न कर पाना, थकावट, आलस्य, ज्यादा नींद आना आदि।

कारण – भोजन का ठीक से न पचना, अरूचि, खून की कमी हो तो सुबह नहा–धोकर तुलसी के पाँच पत्ते अच्छी तरह चबाकर निगल जाइये। सारे दिन शरीर में चुस्ती स्फूर्ति बनी रहेगी। शरीर पुष्ट और बलिष्ट हो जायेगा। चेहरा सुर्ख और सुंदर हो जायेगा।

**पथरी –** रोगी को इस तरह बैठा दीजिए कि अंगीठी पर रखी पतीली और पतीला उसके नीचे आ जाये। तुलसी की मंजरी का काढ़ा बनायें और जैसे ही भाप बनने लगे उसे अच्छी तरह लें। मूत्रेंद्रिय पर भाप जैसे प्रभाव डालती जायेंगी। पथरी गलकर बिना ऑपरेशन के बाहर आ जायेगी।

**पेशाब में रूकावट –** पेशाब करते समय खिचाव पड़े और दर्द के मारे प्राण ऐठने लगे तो पाँच–सात ग्राम तुलसी के बीज रात को भिगो दें। और सुबह पीस कर चीनी मिलाकर पी जायें। पेशाब खुलकर आने लगेगा। यह उपचार महीना भर जारी रखें।

**थकान –** तुलसी के पत्तों को छाया में सुखा लें और चाय की पत्ती के स्थान पर उसका प्रयोग करें। कफ, सर्दी, जुकाम, बुखार, थकान, सिर दर्द से आप सुरक्षित रहेंगे।

### स्त्रियों व बच्चों के रोग

**प्रदर –** तुलसी के पत्तों के रस में जीरा मिलाकर गाय के दूध के साथ सेवन करने से दोनों प्रकार के प्रदर में लाभ होता है।

### विभिन्न जहर उतारने के लिए

**बिच्छू काटने पर –** तुलसी के पत्ते व सेंधा नमक पीस लें और बिच्छू ने जहां काटा हो, उस स्थान पर पन्द्रह–पन्द्रह मिनट के बाद लेप करें। तुलसी की पत्ती का रस, नींबू का रस और गौमूत्र तीनों को मिलाकर थोड़ा सा सेंधा नमक मिला दें और 50 ग्राम पिलाने के बाद जब तक दर्द शांत न हो जाये, रूई के फोहे से लगाते रहें।

**साँप का विष –** साँप काट ले तो तुलसी रस में काली मिर्च पीसकर नाक में टपकायें। तुलसी का एक–एक चम्मच रस थोड़ी–थोड़ी देर बाद पिलाते रहें।

**दूषित पानी –** तुलसी के पाँच पत्ते तोड़कर पानी में डाल दें। कुछ देर बाद पानी निर्विकार हो जायेगा, पत्ते हरे ही होने चाहिए।

**मच्छर –** मलेरिया के लिए विदेशियों ने एक स्वर से माना है कि तुलसी प्रमाणिक इलाज है।

### पैतृक रोग

संसार में पैतृक रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए तुलसी मस्तक पर चंदन की तरह लेपनी होगी, क्योंकि शरीर का ज्ञान–केन्द्र मस्तक और मस्तिष्क ही है। तुलसी मूल के ऊपर की मिट्टी रोज सवेरे माथे पर लगानी चाहिए। चाहे इसे टोटका समझें चाहे जादू, वैज्ञानिक कसौटी पर यह सोलह आने खरा उतरने वाला उपचार है। किसी भी बालक–बालिका के पैतृक विकार दूर करने के लिए इसे आजमा सकते हैं।

**नोट : उपलब्ध सभी साम्रगी केवल पाठकों की जानकारी और ज्ञानवर्धन के लिए दी गई है। हमारा आपसे विनम्र निवेदन है कि किसी भी उपाय को आजमाने से पहले अपने चिकित्सक से अवश्य संपर्क करें। हमारा उद्देश्य आपको रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारी मुहैया कराना मात्र है। चिकित्सक की सलाह का कोई विकल्प नहीं है।**

हमारे महापुरुष

# स्वामी दयानन्द सरस्वती

**महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के महान चिन्तक, समाज सुधारक व देशभक्त थे। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था। उन्होंने 1875 में एक महान आर्य सुधारक संगठन – आर्य समाज की स्थापना की। वे एक सन्यासी तथा एक महान चिंतक थे। उन्होंने वेदों की सत्ता को सदा सर्वोपरि माना। स्वामीजी ने कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म, ब्रह्मचर्य तथा सन्यास को अपने दर्शन के चार स्तम्भ बनाया।**

### प्रारम्भिक जीवन

दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फ़रवरी टंकारा में सन् 1824 में मोरबी (मुम्बई की मोरवी रियासत) के पास काठियावाड़ क्षेत्र (जिला राजकोट), गुजरात में हुआ था। उनके पिता का नाम कृष्नजी लालजी तिवारी और माँ का नाम यशोदाबाई था। उनके पिता एक कर–कलेक्टर होने के साथ ब्राह्मण परिवार के एक अमीर, समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। दयानंद सरस्वती का असली नाम मूलशंकर था और उनका प्रारम्भिक जीवन बहुत आराम से बीता। आगे चलकर एक पंडित बनने के लिए वे संस्कृत, वेद शास्त्रों व अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लग गए।

### ज्ञान की खोज

फाल्गुन कृष्ण संवत् 1895 में शिवरात्रि के दिन उनका पूरा परिवार रात्रि जागरण के लिए एक मंदिर में ही रुका हुआ था। सारे परिवार के सो जाने के पश्चात् भी वे जागते रहे कि भगवान शिव आयेंगे और प्रसाद ग्रहण करेंगे। उन्होंने देखा कि शिवजी के लिए रखे भोग को चूहे खा रहे हैं। यह देख कर वे बहुत आश्चर्यचकित हुए और सोचने लगे कि जो ईश्वर स्वयं को चढ़ाये गये प्रसाद की रक्षा नहीं कर सकता वह मानवता की रक्षा क्या करेगा?इस बात पर उन्होंने अपने पिता से बहस की और तर्क दिया कि हमें ऐसे असहाय ईश्वर की उपासना नहीं करनी चाहिए।

अपनी छोटी बहन और चाचा की हैजे के कारण हुई मृत्यु से वे जीवन–मरण के अर्थ पर गहराई से सोचने लगे और ऐसे प्रश्न करने लगे जिससे उनके माता पिता चिन्तित रहने लगे। तब उनके माता–पिता ने उनका विवाह किशोरावस्था के प्रारम्भ में ही करने का निर्णय किया (19वीं सदी के आर्यावर्त (भारत) में यह आम प्रथा थी)। लेकिन बालक मूलशंकर ने निश्चय किया कि विवाह उनके लिए नहीं बना है और वे 1846 में सत्य की खोज में निकल पड़े और यात्रा करते हुए वह गुरु विरजानन्द के पास पहुंचे। गुरुवर ने उन्हें पाणिनी व्याकरण, पातंजल–योगसूत्र तथा वेद–वेदांग का अध्ययन कराया। गुरु दक्षिणा में उन्होंने मांगा– विद्या को सफल कर दिखाओ, परोपकार करो, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो, मत मतांतरों की अविद्या को मिटाओ, वेद के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करो, वैदिक धर्म का आलोक सर्वत्र विकीर्ण करो। यही तुम्हारी गुरुदक्षिणा है। उन्होंने आशीर्वाद दिया कि ईश्वर उनके पुरुषार्थ को सफल करे। उन्होंने अंतिम शिक्षा दी –मनुष्यकृत ग्रंथों में ईश्वर और ऋषियों की निंदा है, ऋषिकृत ग्रंथों में नहीं। वेद प्रमाण हैं। इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महर्षि दयानन्द ने अनेक स्थानों की यात्रा की। उन्होंने हरिद्वार में कुंभ के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई। उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ किए। वे कलकत्ता में बाबू केशवचन्द्र सेन तथा देवेन्द्र नाथ ठाकुर के संपर्क में आए। यहीं से उन्होंने पूरे वस्त्र पहनना तथा आर्यभाषा (हिन्दी) में बोलना व लिखना प्रारंभ किया।

### आर्य समाज की स्थापना

महर्षि दयानन्द ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 1932 (सन् 1875) को गिरगांव मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। आर्यसमाज के नियम और सिद्धांत प्राणिमात्र के कल्याण के लिए हैं, संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

## समाज सुधार के कार्य

महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों और रूढियों–बुराइयों को दूर करने के लिए निर्भय होकर उन पर आक्रमण किया। वे 'संन्यासी योद्धा' कहलाए। उन्होंने जन्मना जाति का विरोध किया तथा कर्म के आधार वेदानुकूल व वर्ण–निर्धारण की बात कही। वे दलितोद्धार के पक्षधर थे। उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा के लिए प्रबल आन्दोलन चलाया। उन्होंने बाल विवाह तथा सती प्रथा का निषेध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। उन्होंने ईश्वर को सृष्टि का निमित्त कारण तथा प्रकृति को अनादि तथा शाश्वत माना। वे तैत्रवाद के समर्थक थे। उनके दार्शनिक विचार वेदानुकूल थे। उन्होंने यह भी माना कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र हैं तथा फल भोगने में परतन्त्र हैं। महर्षि दयानन्द सभी धर्मानुयायियों को एक मंच पर लाकर एकता स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील थे। उन्होंने इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) दरबार के समय 1878 में ऐसा प्रयास किया था। उनके अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में उनके मौलिक विचार सुस्पष्ट रूप में प्राप्य हैं। वे योगी थे तथा प्राणायाम पर उनका विशेष बल था। वे सामाजिक पुनर्गठन में सभी वर्णों तथा स्त्रियों की भागीदारी के पक्षधर थे। राष्ट्रीय जागरण की दिशा में उन्होंने सामाजिक क्रान्ति तथा आध्यात्मिक पुनरुत्थान के मार्ग को अपनाया। महर्षि दयानन्द समाज सुधारक तथा धार्मिक पुनर्जागरण के प्रवर्तक तो थे ही, वे प्रचण्ड राष्ट्रवादी तथा राजनैतिक आदर्शवादी भी थे। विदेशियों का आर्यावर्त में राज होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विधान पढ़ना–पढ़ाना व बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषावादि, कुलक्षण, वेद–विद्या का प्रचार आदि कुकर्म हैं, जब आपस में भाई–भाई लड़ते हैं और तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। उन्होंने राज्याध्यक्ष तथा शासन की विभिन्न परिषदों एवं समितियों के लिए आवश्यक योग्यताओं को भी गिनाया है। उन्होंने न्याय की व्यवस्था ऋषि प्रणीत ग्रन्थों के आधार पर किए जाने का पक्ष लिया। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

## स्वराज्य के प्रथम सन्देशवाहक

स्वामी दयानन्द सरस्वती को सामान्यतः केवल आर्य समाज के संस्थापक तथा समाज–सुधारक के रूप में ही जाना जाता है। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए किये गए प्रयत्नों में उनकी उल्लेखनीय भूमिका की जानकारी बहुत कम लोगों को है। वस्तुस्थिति यह है कि पराधीन आर्यावर्त (भारत) में यह कहने का साहस सम्भवतः सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही किया था कि 'आर्यावर्त (भारत), आर्यावर्तियों (भारतीयों) का है'। हमारे प्रथम स्वतन्त्रता समर, सन् 1857 की क्रान्ति की सम्पूर्ण योजना भी स्वामी जी के नेतृत्व में ही तैयार की गई थी और वही उसके प्रमुख सूत्रधार भी थे। वे अपने प्रवचनों में श्रोताओं को प्रायः राष्ट्रीयता का उपदेश देते और देश के लिए मर मिटने की भावना भरते थे। 1855 में हरिद्वार में जब कुम्भ का मेला लगा था तो उसमें शामिल होने के लिए स्वामी जी ने आबू पर्वत से हरिद्वार तक पैदल यात्रा की थी। रास्ते में उन्होंने स्थान–स्थान पर प्रवचन किए तथा देशवासियों की नब्ज़ टटोली। उन्होंने यह महसूस किया कि लोग अब अंग्रेजों के अत्याचारी शासन से तंग आ चुके हैं और देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने को आतुर हो उठे हैं।

## क्रान्ति की विमर्श

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हरिद्वार पहुँच कर वहां एक पहाड़ी के एकान्त स्थान पर अपना डेरा जमाया। वहीं पर उन्होंने पाँच ऐसे व्यक्तियों से मुलाकात की, जो आगे चलकर सन् 1857 की क्रान्ति के कर्णधार बने। ये पाँच व्यक्ति थे नाना साहेब, अजीमुल्ला खां, बाला साहब, तात्या टोपे तथा बाबू कुंवर सिंह। बातचीत काफी लम्बी चली और यहीं पर यह तय किया गया कि फिरंगी सरकार के विरुद्ध सम्पूर्ण देश में सशस्त्र क्रान्ति के लिए आधारभूमि तैयार की जाए और उसके बाद एक निश्चित दिन सम्पूर्ण देश में एक साथ क्रान्ति का बिगुल बजा दिया जाए। जनसाधारण तथा आर्यावर्तिय (भारतीय) सैनिकों में इस क्रान्ति की आवाज को पहुँचाने के लिए 'रोटी तथा कमल' की भी योजना यहीं तैयार की गई। इस सम्पूर्ण विचार विमर्श में प्रमुख भूमिका स्वामी दयानन्द सरस्वती की ही थी।

उनकी लोकप्रियता निरन्तर बढ़ने लगी। इससे अंग्रेज अधिकारियों के मन में यह इच्छा उठी कि अगर इन्हें अंग्रेजी सरकार के पक्ष में कर लिया जाए तो सहज ही उनके माध्यम से जनसाधारण में अंग्रेजों को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। इससे पूर्व अंग्रेज अधिकारी इसी प्रकार से अन्य कुछ धर्मोपदेशकों तथा धर्माधिकारियों को विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर अपनी तरफ मिला चुके थे। उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती को भी उन्हीं के समान समझा। तद्नुसार एक ईसाई पादरी के माध्यम से स्वामी जी की तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड नार्थब्रुक से मुलाकात करवायी गई। यह मुलाकात मार्च 1873 में कलकत्ता में हुई। उन्होंने अपनी मुलाकात में स्वामी जी से अंग्रेजी सरकार के कल्याण हेतु प्रार्थना करने का आग्रह किया।

स्वामी जी ने निर्भीकता और दृढ़ता से गवर्नर जनरल को उत्तर दिया– 'मैं ऐसी किसी भी बात को स्वीकार नहीं कर सकता। मेरी यह स्पष्ट मान्यता है कि राजनीतिक स्तर पर मेरे देशवासियों की निर्बाध प्रगति के लिए तथा संसार की सभ्य जातियों के समुदाय में आर्यावर्त (भारत) को सम्माननीय स्थान प्रदान करने के लिए यह अनिवार्य है कि मेरे देशवासियों को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हो। सर्वशक्तिशाली परमात्मा के समक्ष प्रतिदिन मैं यही प्रार्थना करता हूं कि मेरे देशवासी विदेशी सत्ता के जुए से शीघ्रातिशीघ्र मुक्त हों।'

## अंतिम शब्द

स्वामी जी की मृत्यु 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली के दिन सन्ध्या के समय हुई थी। स्वधर्म, स्वभाषा, स्वराष्ट्र, स्वसंस्कृति और स्वदेशोन्नति के अग्रदूत स्वामी दयानन्द जी का शरीर सन् 1883 में दीपावली के दिन पंचतत्व में विलीन हो गया और वे अपने पीछे छोड़ गए एक सिद्धान्त, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् – अर्थात् सारे संसार को श्रेष्ठ मानव बनाओ। उनके अन्तिम शब्द थे – 'प्रभु! तूने अच्छी लीला की। आपकी इच्छा पूर्ण हो।'

हमारे प्रशिक्षण केन्द्र/शिविर स्थल

# प्रशिक्षण केन्द्र, रिडमलसर, बीकानेर

## अद्भुत वास्तु एवं स्थापत्य कला का गवाह

– स्काउट गाइड ज्योति डेस्क

### रिडमलसर प्रशिक्षण केन्द्र का रियासतकालीन स्वरूप

बीकानेर के रिडमलसर में रियासतकालीन सैरगाह स्थल आज राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के बीकानेर मण्डल का सुनियोजित व सुव्यवस्थित प्रशिक्षण स्थल के रूप में जाना जाता है। राजपरिवार का यह स्थल देवीकुण्ड तालाब के किनारे एक हरियाली से आच्छादित रमणीक व धार्मिक स्थान था। रियासत काल में राजघराने की महिलाओं के लिए सैरगाह स्थल के रूप में तत्कालीन महाराजा डॉ. गंगा सिंह जी ने इस स्थल को विकसित करवाया था। इसके समीप ही भगवान शिव जी एवं 10 देवी–देवताओं के मंदिर के दर्शनार्थ इस स्थल पर राज परिवार के लोग आया करते थे। एक सुन्दर बगीचा जहाँ लगभग सभी प्रकार के फल–फूलों के पेड़–पौधे थे जिन्हें समीप ही स्थित कुँए के जल से सींचा जाता था, के साथ छोटा महलनुमा सुसज्जित भवन, जो आज भी अपनी स्थापत्य कला को प्रदर्शित करता है, विद्यमान था। यहाँ विशेषतः जनानाओं के लिए तालाब में स्नान हेतु अद्भुत वास्तुकला को प्रदर्शित करता अनूठा कक्ष था, जिसके भूतल में तालाब का स्वच्छ पानी भरा रहता था और तालाब की तरफ बने द्वारों पर पत्थर की जालियां हुआ करती थी। इसी कक्ष से एक रास्ता अन्दर ही अन्दर मंदिर को जाता था, जिससे रानियां एवं उनकी सखियाँ स्नानोपरान्त मंदिर दर्शन को जाती थी। इस पूरे परिसर के चारों ओर बुर्जियों बनी हुई थी जिन खड़े रहकर नाज़र (किन्नर) पहरा देते थे, क्योंकि वहाँ पुरूषों का प्रवेश वर्जित था। इस स्थल तक जाने वाली सड़क के दोनों ओर तालाब थे। एक ओर देवीकुण्ड सागर तथा दूसरी ओर कल्याण सागर। काल के ग्रास में दोनों आज लगभग सूख चुके हैं।

बरसात के मौसम में देवीकुण्ड सागर में पानी भरा रहता है, परन्तु निरन्तर पानी की आवक के अवरूद्ध रहने से 2–3 माह में ही यह तालाब पुनः सूख जाता है।

धीरे–धीरे रियासत में और भी पैलेस बने जैसे गजनेर पैलेस आदि। विस्तार के साथ–साथ इस स्थल की उपयोगिता राजघराने के लिए कम होती गई और एकीकरण से पूर्व तत्कालीन महाराजा सादुल सिंह जी ने यह स्थल स्काउटिंग–गाइडिंग के प्रशिक्षण के लिए प्रदान कर दिया। तब से यह बाग राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, मण्डल प्रशिक्षण केन्द्र, रिडमलसर, बीकानेर से नाम से जाना जाता है। स्काउट गाइड संगठन के लिए यह गौरवमयी बात है कि बीकानेर राजपरिवार ने सदैव स्काउटिंग गाइडिंग को अपने क्षेत्र में बढ़ावा दिया और इसके लिए हर सम्भव सहायता मुहैया करवाई। उपरोक्त समस्त जानकारी देते हुए सिल्वर स्टार से अलंकृत वयोवृद्ध श्री रणजीत सिंह जी शेखावत ने हमें बताया कि बीकानेर के महाराजा स्वयं स्काउटिंग में रूचि रखते थे तथा अक्सर स्काउट शिविरों का विज़िट भी किया करते थे। श्री शेखावत ने 1958–59 में इस प्रशिक्षण केन्द्र पर आयोजित कब मास्टर प्रशिक्षण शिविर में सहभागिता की और उस समय का वृत्तान्त बताया कि तब देवीकुण्ड सागर में पानी भरा रहता था और हम केन्द्र में 3–4 फुट गहरा गड्डा रात को खोदते थे, जिसमें सुबह तक तालाब का पानी भरा मिलता था, जिसे पीने के काम में लेते थे।

### प्रशिक्षण केन्द्र का वर्तमान स्वरूप

प्रगति के सोपानों से गुजरता हुआ यह केन्द्र वर्तमान में राजस्थान के श्रेष्ठ प्रशिक्षण केन्द्रों में से एक है। विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रमों एवं प्रशिक्षणार्थियों का गवाह यह केन्द्र आज अपनी सुविधाओं और खुबसूरती के लिए जाना जाता है। मुख्य द्वार में प्रवेश करते हुए दाहिंनी ओर पूर्व राज्य मुख्य आयुक्त श्री जगन्नाथ सिंह जी मेहता की याद दिलाता 'मेहता स्थल' है। बाईं ओर आगे बढ़ने पर गेस्ट हाऊस तथा उसके आगे अशोक स्थल है, जहाँ

प्रथम बार किसी प्रशिक्षणार्थी का परिचय लिया जाता है। इसके साथ जुड़ा है रियासत कालीन भवन जिसमें रानी महल व अनेक कक्ष तथा वार्डन निवास व अन्य कमरे, स्नानागार, शौचालय ब्लॉक निर्मित हैं। भवन के बाहर सेन्टर मेस....छायादार स्थाई बैठक व्यवस्था जहाँ प्रशिक्षणार्थी शारीरिक व मानसिक ऊर्जा प्राप्त करता है।

केन्द्र पर कुल 27 पक्की हट्स निर्मित है, जो अंग्रेजी के 'सी' आकार में एक लाईन में बनी हुई है। खपरेल की ये हट्स पंखों आदि सुविधायुक्त है। इन हट्स की सामने की पंक्ति प्रशिक्षण केन्द्र को दो भागों में बाँटती है। स्थाई रूप से 10 चबुतरे निर्मित हैं जिन पर आवश्यकतानुसार छोलदारियां लगाई जा सकती है। यह प्रशिक्षण केन्द्र सुनियोजित व सुव्यवस्थित तरीके से विकसित किया गया है। यहाँ कुछ वर्षों पूर्व राज्य सरकार के सहयोग से रेन वाटर हार्वेस्टिंग के लिए एक बड़े टाँके का निर्माण करवाया गया, जिसमें पूरे शिविर केन्द्र का बरसाती पानी नालियों के माध्यम से एकत्र होता है। इस पानी से लगभग 2–3 महिने तक इस केन्द्र पर लगे पेड़–पौधों को सींचने के लिए जरूरी पानी की समस्या से निजात तो मिलता ही है साथ ही बरसात का पानी व्यर्थ नहीं बहता।

इस शिविर केन्द्र पर आकर्षण का केन्द्र एडवेंचर बेस 'रॉक क्लाइम्बिंग वॉल' भी है। तीन मंजिला ऊँची इस वॉल को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के मापदण्ड पर निर्मित किया गया है। आज पूरे बीकानेर में इसकी उत्कृष्टता के आधार पर साहसिक गतिविधियों के लिए इसका अपना ही महत्त्व है।

## बीकानेर स्टेट स्काउटिंग के संस्थापक गुरूप्रसाद श्रीवास्तव

बीकानेर में स्काउटिंग की बात हो और गुरूप्रसाद जी श्रीवास्तव का जिक्र ना हो तो वह बात ही अधुरी कहलायेगी।

राजस्थान के एकीकरण से पूर्व स्काउट गाइड एसोसिएशन सम्पूर्ण भारत में प्रसार कर रहा था। बीकानेर के महाराजा डॉ. गंगासिंह जी ने बॉय स्काउट एसोसिएशन के तहत अपनी रियासत में स्काउट गतिविधि के सुचारू संचालन के लिए कई कदम उठाये। इसी के तहत सन् 1 मार्च 1937 में बीकानेर स्टेट बॉय स्काउट उसोसिएशन के संस्थापक श्री गुरूप्रसाद श्रीवास्तव को इसका दायित्व सौंपा गया। 8 अक्टूबर 1942 को महाराजा गंगासिंह जी ने बॉय स्काउट ऑफ एसोसिएशन ऑफ बीकानेर का चार्टर जारी किया। राजस्थान के एकीकरण पश्चात तथा भारत स्काउट व गाइड के गठन पर गुरू प्रसाद जी ने बीकानेर के प्रथम सहायक राज्य संगठन आयुक्त के पद पर अपनी सेवाएं दी। गुरू प्रसाद जी ने 30 जून 1957 तक अपनी सेवाएं इस आन्दोलन को प्रदान कर कई सोपान हांसिल किये।

गुरू प्रसाद सक्सैना ने 22 वर्ष की उम्र में 14 अप्रेल 1922 को कुँए में डूबती सात साल की बच्ची को बचाया था। इस साहस एवं वीरता पूर्ण कार्य के लिए 22 जनवरी 1923 को लार्ड बैडेन पावेल द्वारा आपको 'सिल्वर क्रॉस फॉर गैलेन्ट्री' अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस घटना का जिक्र बैडेन पावेल ने अपनी पुस्तक 'स्काउटिंग फॉर बॉयज़ इन इण्डिया' के एक संस्करण में पृष्ठ संख्या 248 'सेविंग लाइफ' पर किया है जो सुधी पाठकों के लिए अक्षरशः निम्नांकित है–

*"In addition to our medal Scout Cox was also awarded a medal by the Royal Humane Society for his plucky act.*

*And here is another case which occurred in the United Provinces in India :-*

*On April 14th, 1922, a seven-year-old girl fell into a well. Near the house lived an Indian Boy Scout, Gur Prasad.*

*Prasad, who was sitting in a room near the well, heard a splash and rushed to the rescue. He lowered a rope, but the child had lost her senses through fright and did not grasp it. Prasad therefore tied the rope to an iron beam over the well, and by its aid slipped down to the surface of the well and dived in, brought the child to the surface, tied the rope round her and dragged her out and handed her over to her parents safe and sound.*

*Scout Prasad, in descending into the well, injured his right hand so severely that he could not go in for an Examination the following week, But he had saved the life of a fellow-being and had well earned the Silver Cross of the Scouts which was awarded to him."*

राजस्थान के बीकानेर जिले के गुरूप्रसाद जी को यह अवार्ड मिलना और बैडेन पावेल द्वारा लिखित पुस्तक में इसका जिक्र होना न सिर्फ राजस्थान अपितु भारतीय स्काउटिंग के लिए गौरव की बात है।

# दक्षता पदक

**स्काउट गाइड ज्योति में दक्षता पदकों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की जा रही हैं। आशा है यह जानकारी प्रशिक्षण के मद्‌देनज़र उपयोगी साबित होगी। इस अंक में 'जिम्नास्ट ( कसरती/मल्ल )' दक्षता बैज की जानकारी दी जा रही है।**

## जिम्नास्ट (कसरती/मल्ल)
## GYMNAST

स्काउट जिम्नास्ट (कसरती/मल्ल) बैज को तब तक नहीं ले सकते जब तक कि उन्होंने इसे किसी प्रशिक्षित जिम्नास्ट से न सीखा हो। इसे प्राप्त करने की प्रक्रिया निम्नानुसार है–

### (अ) 16 वर्ष से कम आयु वर्ग के लिए–

1. सही तरीके से सीधा तनकर खड़ा हो सके तथा सही विधि से चलना व दौड़ना जाने।
2. फ्री स्टैंडिंग 'कसरतों को तालिका के अनुसार नियंत्रण रखते हुए कर सके।
3. 0.9मीटर(3 फूट) ऊँचाई तक सही विधि से कूद सके।
4. सन्तुलन करने के ढाँचे (बैलेन्सिग फॉर्म) या छड़ (बार) के संकड़े किनारे पर सही मुद्रा में आगे–पीछे चल सके।
5. निम्नलिखित में से कोई तीन सही मुद्रा में करें–
   - i. 4.2 मीटर (14 फुट) रस्सी पर चढ़ना।
   - ii. दो रस्सियों के बीच से होकर तथा उनके बीच में कलाबाजी करना।
   - iii. दीवार के सहारे हाथों के बल खड़ा होना(सिर नीचे, पैर ऊपर)
   - iv. दीवार में लगे डंडों(वार्स) या स्वनिर्मित उपकरण पर उल्टा लटक सके।
   - v. एक 'बार' पर बगल की ओर (साइडवेज) चल सकना।
6. निम्न में से तीन को सही मुद्रा में करना–
   - i. दाएँ या बाएँ हाथ की गाड़ी चक्र '(कार्ट व्हील)।
   - ii. धू वाल्ट जैसे–स्कॉट।
   - iii. पीठ के ऊपर से होकर मैंढक–कूद लगाना।
   - iv. वूल्फ या जैक इन दी बॉक्स।
   - v. पेटी के ऊपर से खरगोश की तरह कूदना या अन्य प्रकार से कूदना।

### (ब) 16 वर्ष से अधिक आयु वालों के लिए–

1. सही तरीके से सीधा तनकर खड़ा हो सके तथा सही विधि से चलना व दौड़ना जाने।

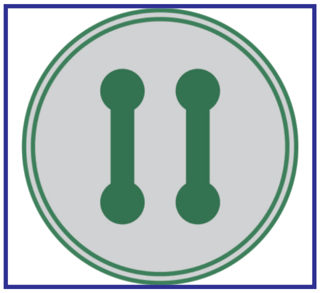

2. कम–से–कम एक सप्ताह तक विद्यालय में या अन्य किसी प्रशिक्षण केन्द्र पर जिम्नास्टिक की कक्षाओं में उपस्थित रहना।
3. परीक्षक द्वारा स्वीकृत स्वतंत्र रूप से खड़े होकर की जाने वाली कसरतों की तालिका को करके दिखाना।
4. किसी सन्तुलन बनाए रखने वाले ढाँचे (बैलेंसिंग फार्म) या डण्डे (बार) के संकरे किनारे पर निम्न में से किन्हीं दो का सही तरीके से प्रदर्शन करें–
   - i. प्रत्येक कदम पर गेंद उछालते और उसे पकड़ते हुए आगे की ओर बढ़ना।
   - ii. बिना सहारा लिए बगलों की ओर से (साइडवेज) चल सके।
   - iii. ढाँचे पर खड़ा होकर हाथों और दाँयी टाँग को बराबर में उठा सके व वापिस रख सके, पुनः आगे कदम रखें और दूसरी टाँग को उठाते हुए इसे दोहराए।
   - iv. घुटनों को पूरी तरह मोड़कर चलना और प्रत्येक तीसरे कदम पर इसे सीधा करना।
5. निम्न समूह में से कोई एक करें–
   - i. एक रस्से पर कम–से–कम 4.8 मीटर 16 फुट चढ़ना, डण्डे (बार) पर बगल की ओर से चलना या दीवार पर लगे डण्डों पर चढ़ और उतर सके या डण्डे (बार) पर उल्टा चलना।
   - ii. बिना किसी सहारे के, हाथों के बल खड़ा हो सकना या डण्डे (बार) अथवा स्वनिर्मित उपकरण पर नीचे या ऊपर की ओर कलाबाजी लगा सके या दो रस्सों के बीच लम्बवत उल्टा लटक सके।

# फार्म – 4

**RNI No. - RAJ BIL/2000/1835**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | प्रकाशन स्थान | जयपुर |
| 2. | प्रकाशन अवधि | मासिक |
| 3. | मुद्रक का नाम | मै. हरिहर प्रिन्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर |
| | क्या भारत का नागरिक है? | हाँ |
| | यदि विदेशी है तो मूल देश | नहीं |
| | पता | मै. हरिहर प्रिन्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर |
| 4. | प्रकाशक का नाम | राज्य सचिव, राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, राज्य मुख्यालय, जयपुर–302015 |
| | क्या भारत का नागरिक है? | हाँ |
| | यदि विदेशी है तो मूल देश | नहीं |
| | पता | जवाहर लाल नेहरू मार्ग, बजाज नगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान) |
| 5. | सम्पादक का नाम | डॉ. पी.सी. जैन |
| | क्या भारत का नागरिक है? | हाँ |
| | यदि विदेशी है तो मूल देश | नहीं |
| | पता | जवाहर लाल नेहरू मार्ग, बजाज नगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान) |
| 6. | उन व्यक्तियों के नाम व पता जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों। | राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, राज्य मुख्यालय, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, बजाज नगर, जयपुर – 302015 |

मैं राज्य सचिव एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

**डॉ. पी.सी. जैन**

प्रकाशक एवं सम्पादक के हस्ताक्षर

## CELEBRATIONS DAYS : FEBRUARY - MARCH, 2026

| | | |
|---|---|---|
| 04 February | : | World Cancer Day |
| 07 February | : | Safer Internet Day |
| 20 February | : | World Social Justice Day |
| 21 February | : | International Mother Language Day |
| 22 February | : | Baden Pawell Day & Thinking Day |
| 28 February | : | National Science Day |
| 08 March | : | International Women Day |
| 21 March | : | World Forest Day |
| 22 March | : | World Water Day |
| 23 March | : | Shahid Diwas |
| 30 March | : | Rajasthan Day |

**Plan an activity with your unit on these days and send your success stories & photos to "scoutguidejyoti@gmail.com"**

# गतिविधि पञ्चांग

## राज्य पञ्चांग

**PROPOSED**

| नाम शिविर/गतिविधि | स्थान | तिथियां |
|---|---|---|
| द्वितीय/तृतीय सोपान प्रशिक्षण शिविर | स्थानीय संघ स्तर | 01 से 05.02.2026 |
| स्काउटर/गाइडर बेसिक कोर्स | जिला/मण्डल स्तर | 01 से 07.02.2026 |
| उर्स मेला अजमेर | जिला स्तर | मेले के अनुसार |
| द्वितीय/तृतीय सोपान जांच शिविर | स्थानीय संघ स्तर | 06 से 08.02.2026 |
| नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियां | ग्रुप/जिला/मण्डल स्तर पर | 11 से 17.02.2026 |
| रीजनल लेवल कब बुलबुल महोत्सव | बीकानेर | 19 से 23.02.2026 |
| राज्य स्तरीय कब बुलबुल महोत्सव | बनीपार्क जयपुर | 19 से 23.02.2026 |
| खाटू श्याम जी मेला शिविर सीकर | श्रीखाटूश्याम जी (राज्य स्तर ) | मेले के अनुसार |
| ऑर्गेनाइजिंग कमिश्नर व प्रोग्राम एवं प्लानिंग कमेटी सभा | जयपुर | 07 से 08.03.2026 |
| नेशनल लेवल एनवायरमेंट एवयरनेस कम ड्रेजर्ट ट्रेंकिंग प्रोग्राम | जैसलमेर | 08 से 14.03.2026 |
| दिव्यांग गतिविधियां | ग्रुप/जिला/मण्डल स्तर पर | 15.03.2026 तक |
| अनाथालय गतिविधियां | ग्रुप/जिला/मण्डल स्तर पर | 15.03.2026 तक |
| पालनहार गतिविधियां | ग्रुप/जिला/मण्डल स्तर पर | 15.03.2026 तक |
| अनुसूचित जाति स्काउट/गाइड प्रशिक्षण शिविर | ग्रुप/जिला/मण्डल स्तर पर | 15.03.2026 तक |
| जनजाति गतिविधियां | ग्रुप/जिला/मण्डल स्तर पर | 15.03.2026 तक |
| ग्रामीण गतिविधियां | ग्रुप/जिला/मण्डल स्तर पर | 15.03.2026 तक |
| स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम | आबू पर्वत नं. 1 | 21 से 25.03.2026 |
| राज्य स्तरीय मासिक ऑर्गेनाइजर्स ऑनलाइन संगोष्ठी | राज्य स्तर पर | 10.03.2026 तक |
| पाक्षिक ऑर्गेनाइजर्स ऑनलाइन संगोष्ठी | मण्डल स्तर पर | 10.03.2026 तक |
| सचिव/सर्कल ऑर्गेनाइजर्स सभा | मण्डल स्तर पर | 31.03.2026 तक |
| जिला कार्यकारिणी सभा | जिला स्तर पर | 31.03.2026 तक |

## राष्ट्रीय पञ्चांग

**PROPOSED**

| Name of Camp/Activity | Date | Place |
|---|---|---|
| National Youth Adventure Programme | Dec.2025 to March 2026 | Sarsai, Manali, HP |
| National Youth Adventure Programme | Oct.2025 to March 2026 | Sam Sand Dunes, Jaisalmer |
| 27th International Adventure Programme | 02 to 06 Feb. 2026 | NAI, Pachmarhi |
| National Integration Camp | 19 to 23 Feb. 2026 | NYC, Palwal, Haryana |
| National Level Cub/Bulbul Utsav | 19 to 23 Feb. 2026 | NYC, Palwal, Haryana |

## अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चांग

**PROPOSED**

| Name of Camp/Activity | Date | Place |
|---|---|---|
| National Rover Conference at Taiwan 2026 | 06 - 10 Feb. 2026 | Taoyuan City, Taiwan |
| Jamboree Denmark 2026 | 18 - 26 July 2026 | Hedeland Naturepark |
| Icelandic International Jamboree 2026 | 20 - 26 July 2026 | Hamrar Outdoor Scout Center |
| 26th World Scout Jamboree-Poland | 30 July - 08 August 2027 | Gdansk, Northern Poland |

**National Headquarters website : www.bsgindia.org**

# गणतंत्र दिवस पर सम्मान की झलकियां

अजमेर में जल संसाधन मंत्री श्री सुरेश रावत 8 राष्ट्रपति स्काउट्स को सम्मानित करते हुए

सुश्री तनु शर्मा राजकीय महाविद्यालय धौलपुर को जिला स्तर पर सम्मानित करते हुए धौलपुर के जिला कलक्टर एवं एसपी

झुंझुनू में परेड में स्काउट गाइड ग्रुप के द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर सी.ओ. स्काउट महेश कालावत को सम्मानित करते हुए जिला कलक्टर डॉ. अरूण गर्ग

झुंझुनू में विजयेता कुमारी ( गाइड कैप्टन ) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भुकाना को सम्मानित करते हुए जिला कलक्टर डॉ. अरूण गर्ग

ऊर्जा मंत्री श्री हीरालाल नागर सी.ओ गाइड भरतपुर श्रीमती कल्पना शर्मा को सम्मानित करते हुए

सचिव स्थानीय संघ डूंगरपुर भेरू लाल कटारा को जिला कलक्टर अंकित कुमार सिंह सम्मानित करते हुए

जिला कलक्टर डॉ. इंद्रजीत यादव बांसवाड़ा स्काउट मुख्यालय के जिला कोषाध्यक्ष श्री अनवरुद्दीन शेख को सम्मानित करते हुए

उदयपुर में स्काउट परेड के प्रथम स्थान प्राप्त करने पर स्काउट प्रभारियों को केबिनेट मंत्री श्री बाबूलाल खराड़ी एवं जिला कलक्टर श्री नमित मेहता प्रशस्ति प्रदान कर सम्मानित करते हुए

भारत स्काउट व गाइड के बनीपार्क, जयपुर स्थित मण्डल मुख्यालय के प्रशिक्षण केन्द्र का निरीक्षण करते हुए एवं जगतपुरा, जयपुर स्थित राज्य प्रशिक्षण केन्द्र पर आयोजित पांच दिवसीय पायनियरिंग व फर्स्ट एड स्पेशल कोर्स के संभागियों को संबोधित करते हुए राज्य मुख्य आयुक्त श्री निरंजन आर्य

प्रकाशक व मुद्रक : डॉ. पी.सी. जैन, राज्य सचिव, राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स व गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर फोन नं. 0141-2706830 द्वारा मैसर्स हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित।

हिन्दी मासिक एक प्रति रूपये पन्द्रह
प्रकाशन - प्रत्येक माह
पंजीकृत समाचार पत्रों की श्रेणी के अन्तर्गत
आर.एन.आई. नम्बर : RAJ BIL/2000/01835
प्रेषक :-
राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, बजाज नगर, जयपुर-302015
फोन : 0141-2706830, 2941098
ई-मेल : scoutguidejyoti@gmail.com